Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2394-3580 VOLUME - 8 No. : 6, April - 2021

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Indian Tech

Radiant Group of Institution

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

Research Journal SRF Book Publication

ISRS International Scientific Research Solution

Peer Reviewed & Refereed Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

Published by :

Swadeshi Research Foundation & Publication

Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	हिंदी–साहित्य की विकास यात्रा और अनुपस्थित हस्ताक्षर	डॉ. कंचन शर्मा	1-4
2	साहित्य के विकास में कहानी का योगदान	डॉ. पवन सचदेवा	5-6
3	भारत में वैश्वीकरण एवं भारतीय समाज में परिवर्तन : एक अध्ययन	प्रो. विनय कुमार	7-11
4	साहित्य की विकास यात्रा में लोक–तत्त्वों की भूमिका	डॉ. फत्ताराम नायक	12-15
5	सूर काव्य में साहित्य सम्बन्धी आधुनिक जीवन–मूल्य	डॉ. पूनम पाण्डेय	16-20
6	हरियाणा के लोक साहित्य में वर्णित शौर्यता : ऐतिहासिक अध्ययन	अशोक कुमार डॉ. सतेन्द्र	21-24
7	तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में मानवीय संवेदना	राज देव	25-28
8	लोकगीतों में हास्य व्यंग्य का ऐतिहासिक अध्ययन	डॉ. जीतेन्द्र कुमार पाण्डेय	29-32
9	धरती माँ की पुकार	Dr. Shrabani Chakravorty	33-34
10	समकालीन युगबोध : धूमिल का काव्य	डॉ. अर्चना वर्मा	35-36
11	आधुनिक हिन्दी और तेलुगू साहित्य में राम कथा	डॉ. अन्नदासू सरला देवी	37-39
12	सवेगात्मक बुद्धि का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का एक अध्ययन	Km. Priti Dr. Vijay Kumar	40-45

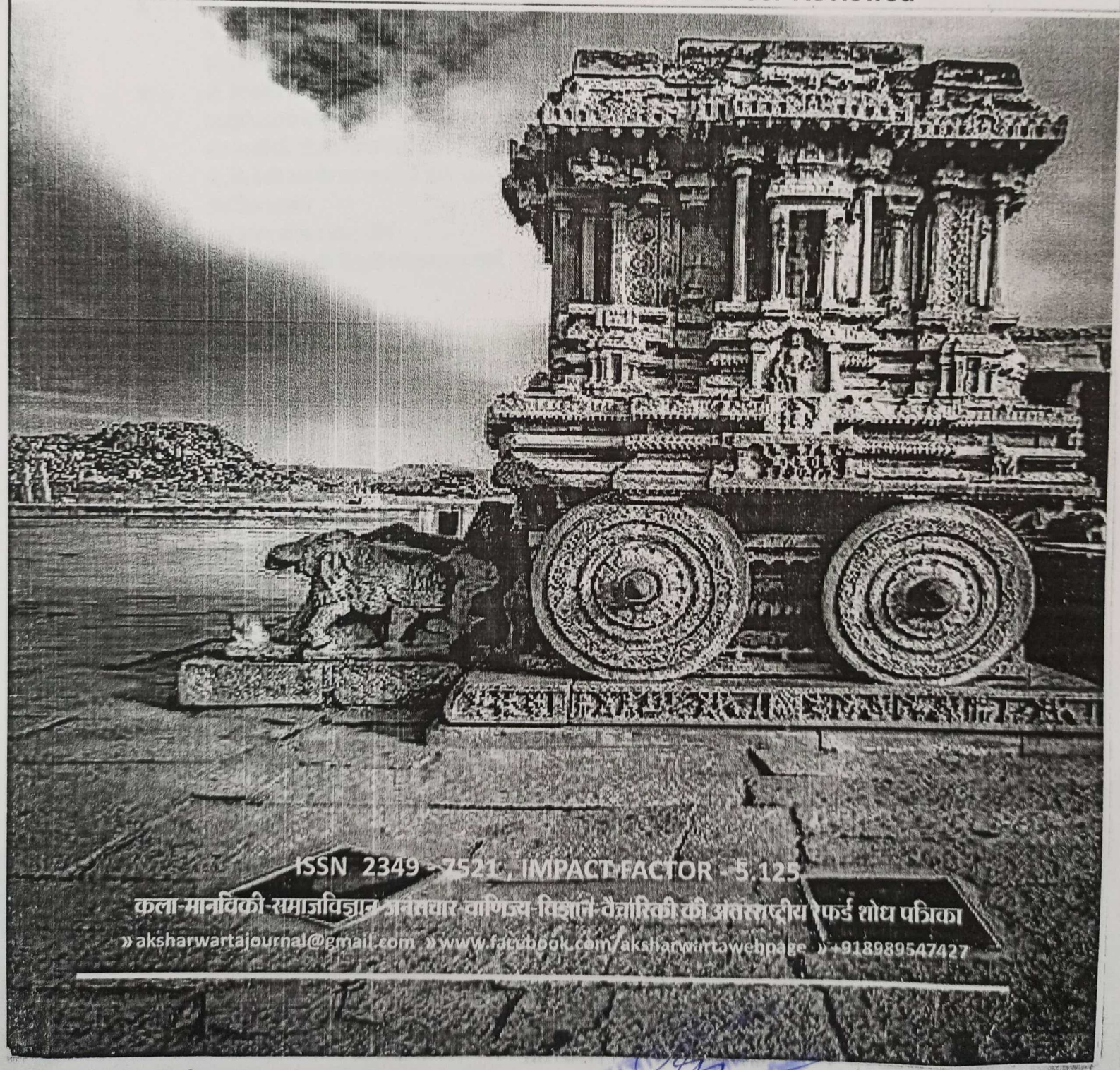
मासिक
RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

मूल्यः 25 /- रूपये

वर्ष-17 अंक - 8 (जून - 2021)
Vol - XVII Issue No - VIII
(June - 2021)

Indexed In International Impact Factor Services (IIFS) Database
Indexed In the International Institute of Organized Research (I2OR) Database
Monthly International Referred Journal & Peer Reviewed



ISSN 2349 - 7521, IMPACT FACTOR - 5.125

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैज्ञानिकी की अंतर्राष्ट्रीय रेफर्ड शोध पत्रिका

»aksharwartajournal@gmail.com »www.facebook.com/aksharwartawebpage »+918989547427

अनुक्रम

» लोकतांत्रिक साहित्य की अवधारणा : नागार्जुन की कालजयिता
डॉ. मंटू कुमार साव 06

» अब्दुल बिस्मिल्ला के कथा साहित्य में घरेलू - कामकाजी स्त्रियों की समस्याएँ, शोषण एवं संघर्ष
शेषनाथ यादव 10

» आदिवासी हिन्दी कहानियों की शिल्पगत संरचना
रत्नेश कुमार 13

» हिन्दी - बोलियों की सार्वभौमिक पहचान और मीडिया
डॉ. सुनीति आचार्य 16

» भारतीय समाज में स्त्रियों के सामाजिक सुधार के संदर्भ में गाँधी दर्शन का ऐतिहासिक अध्ययन
डॉ. जीतेन्द्र कुमार पाण्डेय 19

» डॉ. विवेकी राय की कहानियों में ग्राम जीवन और आधुनिकतम कसमसाहट
नीलम मौर्या, मोहल लाल मौर्य 21

» डॉ. विवेकी राय के उपन्यासों में ग्राम जीवन का बदलता आर्थिक स्वरूप
सूर्य लाल, मोहल लाल मौर्य 25

» पिछली सदियों की स्त्रियों की आत्मकथायें : सुई से कलम तक का सफर
नीलम कुलश्रेष्ठ 29

» डॉ. विवेकी राय के उपन्यासों में चकबंदी के चक्रव्यूह में पिसता गाँव
सूर्य लाल, मोहन लाल मौर्य 33

» व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के रचनात्मक व्यक्तित्व का वैशिष्ट्य
सुधीर कुमार जोशी 37

» राजस्थान के भील लोकगीतों में प्रकृति चित्रण
डॉ. फत्ताराम नायक 40

» संत रविदास के काव्य में जीवन मूल्य
डॉ. पंडित बन्ने 43

» डॉ. कुसुम मेघवाल की कविता के संदर्भ में दलित तथा स्त्री विमर्श
डॉ. नागरत्ना शेट्टि 46

» दलितेतर की दलित कविताओं में शोषण-तंत्र का खुलासा
डॉ. कण्णन के. यू 49

» इंग्लैण्ड के प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों का साहित्यिक अवदान
डॉ. अंगदकुमार सिंह 52

» हिन्दी के विकास में सिनेमा की भूमिका
डॉ. पिल्लाई बिन्दु के. 55

» मध्यकालीन भारतीय शिक्षा - प्रणाली : एक अध्ययन
प्रो. वनफूल दाधीच 57

» शोषण के विरूद्ध अधिकारों से वंचित दलित समाज : आत्मकथाओं के विशेष संदर्भ में
डॉ. कार्तिका एम. एस 60

» अमरकांत के उपन्यासों में सामाजिक युगबोध
अनुज कुमार चौहान 63

» स्त्री सशक्तीकरण और मानवाधिकार समकालीन कविता के परिप्रेक्ष्य में
डॉ. रीनाकुमारी वी. एल 65

» पत्रकारिता के क्षेत्र में हिंदी की धार्मिक पत्रकारिता का वर्चस्व
डॉ. तारा वाणिया 68

» The Environment : We are literally consuming the easth that sustains us
Dr. Hawa Singh Dhaka 72

» Impact of Digitalization on Stock Market in India
Poorva Dawar 76

» Covid-19 Pandemic & Vaccination Rumors In Rural Areas Special Reference of Rajgarh District (MP)
Dr. Bhavna Ujjaliya 79

» पुस्तक समीक्षा
परंपरागत ढांचे से बिल्कुल भिन्न है काव्य संकलन "आरंभ उद्घोष- 21 वीं सदी का"
डॉ. प्रेम भारती 81

ISSN : 2249-930X
पीयर रिव्यूड व यू.जी.सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल

हिंदी अनुशीलन



महात्मा गाँधी विशेषांक

प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो. नरेन्द्र मिश्र

वर्ष - 62
अप्रैल-जून तथा जुलाई-सितम्बर 2020
अंक 2-3

हिंदी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

ISSN : 2249-930X

प्रकाशक : डॉ. निर्मला अग्रवाल, प्रबंधमंत्री, भारतीय हिंदी परिषद्
हिंदी-विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
Website : www.bhartiyahindiparishad.com
Email : hindianusheelan@gmail.com

मूल्य : ₹ 100.00

अक्षर संयोजन : राजेश शर्मा, मो. : 9450252918
मुद्रक : प्रभा कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिंटर्स, विश्वविद्यालय मार्ग, प्रयागराज

अनुक्रम

1. विमर्श 7
प्रोफेसर नंद किशोर पाण्डेय

2. संवाद 13
प्रोफेसर नरेन्द्र मिश्र

3. गांधी की पत्रकारिता का मूलाधार : राष्ट्रीयता 22
डॉ. कमलकिशोर गोयनका

4. हिन्दी कवियों की दृष्टि में गाँधी 38
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

5. महात्मा गांधी, उनका दाय और हमारा दायित्व 41
गिरीश्वर मिश्र

6. गान्धी के 'हिन्द स्वराज्य' की मूल चेतना 48
डॉ. सत्येन्द्र शर्मा

7. पितृसत्तात्मक विवशता और कस्तूरबा 55
प्रो. शिव प्रसाद शुक्ल

8. महात्मा गाँधी पर रचित प्रमुख प्रबन्धकाव्य 63
डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्र

9. आधुनिक हिंदी काव्य में गाँधी और गाँधी दर्शन 72
डॉ. निर्मला अग्रवाल

10. गांधी और अरुणाचल 80
प्रो. हरीश कुमार शर्मा

11. गांधी की सांस्कृतिक अवधारणा 86
प्रो. सूर्यकांत त्रिपाठी

12. मुंशी प्रेमचंद के कथा-साहित्य पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव 90
डॉ. विवेक शंकर

13. गाँधी जी की दृष्टि और स्त्री विमर्श 95
डॉ. चम्पा सिंह

14. बर्बरता के विरुद्ध भद्रता का आह्वान : गाँधी चिन्तन 100
प्रोफेसर (डॉ.) किशोरीलाल रैगर

15. असामया साहित्य म गाधा विचारधारा
प्रो. दिनेश कुमार चौबे 106

16. हिन्दी नाट्य साहित्य में गाँधी दर्शन
डॉ. राकेश शुक्ल 112

17. हिन्दी साहित्यकार 'दिनकर' की दृष्टि में गांधीवाद-एक वृहत चिंतन परम्परा महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन
प्रो. दीपेन्द्र सिंह जडेजा 118

18. स्वाधीनता का महानायक गांधी : काव्य दर्पण में
डॉ. बाबूराम 123

19. मगही के प्रबंध एकार्थ काव्य 'गाँधी'
डॉ. भरत सिंह 131

20. कविगुरु एवं महात्मा होने का अर्थ
डॉ. सुनील कुमार द्विवेदी 140

21. केरल में हिन्दी के प्रचार प्रसार में गांधीजी का योगदान
डॉ. इन्दू के.वी. 145

22. गाँधी-गुण : एक साहित्यिक धरोहर
डॉ. मीता शर्मा 148

23. प्रासंगिकता की चुनौतियों से टकराता गाँधीवाद
डॉ. अनिल राय 155

24. गाँधी-चिंतन और हिन्दी कविता
प्रो. वशिष्ठ अनूप 162

25. भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष और महात्मा गाँधी की पत्रकारिता
डॉ. राम किंकर पाण्डेय 169

26. महात्मा गाँधी और चंपारण सत्याग्रह
डॉ. हरेकृष्ण तिवारी 176

27. हिन्दी गज़ल-साहित्य में गाँधी-दर्शन की अनुगूँज (भानुमित्र कृत गज़ल-ग्रन्थ के विशेष सन्दर्भ में)
डॉ. अरविन्द कुमार जोशी 179

28. गांधी जी के विचारों का हिन्दी काव्य में चिंतन
डॉ. कामिनी ओझा 190

29. मैथलीशरणगुप्त के काव्य में गांधी चिंतन
डॉ. प्रणु शुक्ला 203

30. भारतीय साहित्य में गांधी का प्रदेय
डॉ. कमला चौधरी 212

31. शान्तिदूत महात्मा गांधी और टॉलस्टॉय
डॉ. राहुल पाण्डेय 218

32. गांधीवादी दर्शन और प्रेमचंद का कथा साहित्य
डॉ. प्रेमसिंह 223

33. महात्मा गाँधी के आदर्शों का कहानी और नाटक विधा पर प्रभाव
डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव 228

34. लोक गीतों में गाँधी
डॉ. महीपाल सिंह राठौड़ 239

35. निर्भीक पत्रकारिता के महामानव गांधीजी
डॉ. शशिकांत मिश्र 246

36. मोहन से महात्मा तक
जितेन्द्र कुमार यादव 251

37. वर्तमान भारतीय परिदृश्य एवं गांधी जी के विचार
डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल' 260

38. कुबेरनाथ राय की दृष्टि में गाँधी
डॉ. राजेश कुमार 267

39. हिंदी प्रचार में महात्मा गाँधी का अवदान
नवनीत आचार्य 273

40. गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित प्रमुख हिन्दी उपन्यासकार
डॉ. महात्मा पाण्डेय 278

41. समकालीन कविता में अभिव्यक्त भारतीय सभ्यता एवं गांधी दर्शन
डॉ. बृजेश कुमार पाण्डेय 291

42. महात्मा गांधी के जीवन-संघर्ष का जीवन्त दस्तावेज-पहला गिरमिटिया
डॉ. आनन्द प्रकाश गुप्ता 296

43. सियाराम शरण गुप्त के काव्य में गांधीदर्शन
डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी

पद्मजा शर्मा
का
बहुआयामी रचना-संसार



संपादक :
डॉ. रामप्रसाद दाधीच

प्रकाशक :
रॉयल पब्लिकेशन
प्रकाशक एवं वितरक
18, शक्ति कॉलोनी, गली नं. 2
लोको शेड रोड, रातानाडा,
जोधपुर-342 011 (राजस्थान)
Mobile : 094142-72591
E-mail : rproyalpublication@gmail.com

© डॉ. पद्मजा शर्मा

ISBN : 978-93-82311-67-6 मूल्य : ₹ 400.00

प्रथम संस्करण : 2020

मुद्रक : भारत प्रिण्टर्स (प्रेस), जोधपुर

लेज़र टाइपसेटिंग : रोहन कम्प्यूटर, जोधपुर

Dr. Padmja Sharma Ka Rachana Sansaar
by : Dr. Padmja Sharma
Royal Publication, Jodhpur
First Edition : 2020 ● ₹ 400.00

भूमिका

साहित्य जगत इनका ठीक से मूल्यांकन करे

डॉ. पद्मजा शर्मा का नाम साहित्य जगत के लिए नया नहीं है। आप पिछले कई वर्षों से, कई विधाओं में निरंतर सृजन कर रही हैं। और सिर्फ सृजन ही नहीं सृजन को उच्चता दे रही हैं। लेखन तो बहुत चल रहा है। मुझे लगता है यह युग है बोलने का। बहुत बोला जा रहा है, बहुत लिखा जा रहा है, आलोचनाएँ हो रही हैं। लेकिन मैं यह हृदय के अंतरतम से कह रहा हूँ कि मैं पद्मजा जी के अब तक के लेखन का पाठक रहा हूँ। रचनाकर्म का पाठक रहा हूँ। पाठक ही नहीं मैंने तो समय-समय पर उनके लेखन का मूल्यांकन भी किया है और उन्होंने जो स्थान हिन्दी जगत में बनाया है वह वरेण्य है। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि आज जिस कृति की मैं भूमिका लिख रहा हूँ उसका हिन्दी साहित्य में स्वागत होगा। उसमें अपने समय के बड़े साहित्यकारों के विचार भी संकलित हैं और मैं इस अवसर पर अधिक क्या कहूँ। यही कहूँगा कि पद्मजा जी का साहित्यिक व्यक्तित्व अनेक विधाओं का है। वे बहु विधा लेखन कर रही हैं। शब्दचित्र, साक्षात्कार, समीक्षा, कहानी, लघुकथा, कविता क्या नहीं लिख रही हैं। मैं उनके लेखन पर चकित ही नहीं प्रसन्न भी हूँ कि माँ सरस्वती ने, परमात्मा ने उन्हें इतनी शक्ति दी, इतनी लेखन की विधाएँ दीं, शैलियाँ दीं, लेखन की गरिमा दी, लेखन की विविधता दी, लेखन की गंभीरता दी। यूं तो आज भी वे जगह-जगह पर समय-समय पर हिन्दी साहित्य के लिए सम्मानित होती हैं उनका मूल्यांकन होता है लेकिन समय आएगा जब समग्र रूप में समय यह निश्चय करेगा, बल्कि घोषणा करेगा कि राजस्थान में ऐसी लेखिका है जो निरंतर साहित्य के सृजन में लगी हुई है। सृजन बहुत बड़ी क्षमता मांगता है इसके लिए केवल मस्तिष्क नहीं हृदय भी चाहिए और हृदय भी बड़ा चाहिए। पद्मजा के पास दोनों ही चीजें हैं और इनकी शैली में जो सरलता है वह इनके जीवन की सरलता है। इनकी रचनाओं में जो सहजता है, जो सद्भावनाएँ हैं, जो संभावनाएं हैं, जो सहृदयता है वह वरेण्य हैं। मैं समझता हूँ पद्मजा जी पर बहुत लिखा जा सकता है बहुत लिखने की गुंजाइश है पर अभी इतना ही कहूँगा कि साहित्य जगत इनका ठीक से मूल्यांकन करे। धन्यवाद।

–डॉ. रामप्रसाद दाधीच 'प्रसाद'
'नैवेद्य', नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

अनुक्रम

•	**शब्दचित्र**		**11-53**
1.	अदेखे संसार की अभिव्यक्ति	*–डॉ. सत्यनारायण*	13
1.	जीवन-जाल में जकड़ा, तपता-भीगता ज़िन्दगीनामा	*–डॉ. कैलाश कौशल*	14
1.	दरख्तों के साए में सुकून	*–डॉ. रतनकुमार पाण्डेय*	17
1.	पद्मजा के रिपोर्ताज परंपरागत या रूढ़िबद्ध आलोचकों के लिए चुनौती	*–डॉ. सत्यनारायण*	21
1.	'इंसानी रिश्तों की तलाश' नासिर के तीन सपने	*–डॉ. किशोरीलाल रैगर*	24
1.	जिजीविषा का सपना	*–प्रो. (डॉ.) सरोज कौशल*	29
1.	अपनी बात (नासिर के तीन सपने)	*–डॉ. पद्मजा शर्मा*	33
1.	स्त्रियों का सच	*–डॉ. सत्यनारायण*	34
1.	विमर्श योग्य संस्मरण–'हँसो ना तारा'	*–डॉ. आईदान सिंह भाटी*	36
1.	जीवन के संवेध्य सच	*–डॉ. सुदेश बत्रा*	38
1.	दुःख में भी 'हँसो ना तारा'	*–रेवतीरमण शर्मा*	41
1.	डॉ. पद्मजा शर्मा के शब्दचित्रों में अनुभवों के उतार-चढ़ाव	*–डॉ. कामिनी ओझा*	44
1.	उनकी कहानी कलम की जुबानी	*–डॉ. हरीदास व्यास*	50
•	**कविता**		**55-152**
1.	ये जीवनधर्मी कविताएँ	*–प्रो. (डॉ.) रामप्रसाद दाधीच 'प्रसाद'*	57
1.	आँखों में रड़क रही रेत, जाने कब से...	*–डॉ. रमाकान्त शर्मा*	59
1.	सुन्दर दुनिया क्यों नहीं बनाता कोई	*–डॉ. ताराप्रकाश जोशी*	62
1.	अस्मिता की खोज में : सदी के पार	*–प्रो. विजय कुलश्रेष्ठ*	68

हिंदी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

वर्ष 62 अप्रैल-जून तथा जुलाई-सितम्बर 2020 अंक 2-3 ISSN : 2249-930X

परामर्शदाता
प्रो. कमल किशोर गोयनका
प्रो. सुरेन्द्र दुबे
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रधान संपादक
प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो. नरेन्द्र मिश्र

संपादन सहयोग
डॉ. निर्मला अग्रवाल
प्रो. मीरा दीक्षित

भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग

हिंदी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

ISSN : 2249-930X

प्रकाशक : डॉ. निर्मला अग्रवाल, प्रबंधमंत्री, भारतीय हिंदी परिषद्
हिंदी-विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
Website : www.bhartiyahindiparishad.com
Email : hindianusheelan@gmail.com

मूल्य : ₹ 100.00

अक्षर संयोजन : राजेश शर्मा, मो. : 9450252918
मुद्रक : प्रभा कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिंटर्स, विश्वविद्यालय मार्ग, प्रयागराज

स्वयं सत्यापित

29. मैथिलीशरणगुप्त के काव्य में गांधी चिन्तन 199
डॉ. प्रणु शुक्ला
30. भारतीय साहित्य में गांधी का प्रदेय 203
डॉ. कमला चौधरी
31. शान्तिदूत महात्मा गांधी और टॉलस्टॉय 212
डॉ. राहुल पाण्डेय
32. गाँधीवादी दर्शन और प्रेमचंद का कथा साहित्य 218
डॉ. प्रेमसिंह
33. महात्मा गाँधी के आदर्शों का कहानी और नाटक विधा पर प्रभाव 223
डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव
34. लोक गीतों में गाँधी 228
डॉ. महीपाल सिंह राठौड़
35. निर्भीक पत्रकारिता के महामानव गांधीजी 239
डॉ. शशिकांत मिश्र
36. मोहन से महात्मा तक 246
जितेन्द्र कुमार यादव
37. वर्तमान भारतीय परिदृश्य एवं गांधी जी के विचार 251
डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल'
38. कुबेरेनाथ राय की दृष्टि में गाँधी 260
डॉ. राजेश कुमार
39. हिंदी प्रचार में महात्मा गाँधी का अवदान 267
नवनीत आचार्य
40. गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित प्रमुख हिन्दी उपन्यासकार 273
डॉ. महात्मा पाण्डेय
41. समकालीन कविता में अभिव्यक्त भारतीय सभ्यता एवं गांधी दर्शन 278
डॉ. बृजेश कुमार पाण्डेय
42. महात्मा गांधी के जीवन-संघर्ष का जीवन्त दस्तावेज-पहला गिरमिटिया 291
डॉ. आनन्द प्रकाश गुप्ता
43. सियाराम शरण गुप्त के काव्य में गांधीदर्शन 296
डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी

UGC Approved, Journal No. 49321
Impact Factor : 5.427

ISSN : 0976-6650

शोध दृष्टि

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 13 No. 12 December 2020

PEER REVIEWED JOURNAL

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 5.427 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 12 Year - 11 December, 2020

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Prof. Vashistha Anoop
Department of Hindi
Banaras Hindu University
Varanasi

Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

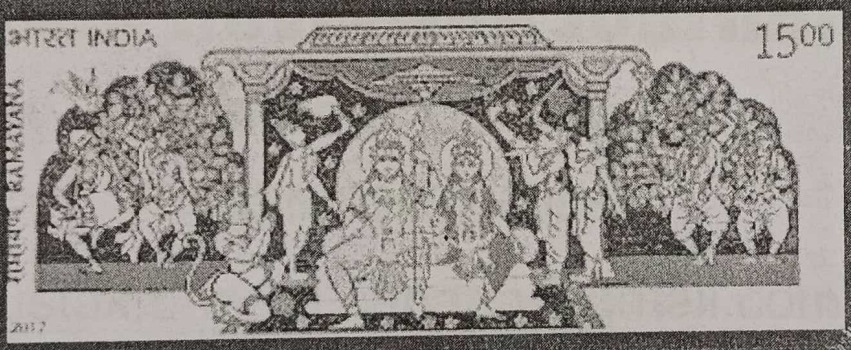
Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, **Website :** shodhdrishti.com, **Mob.** 9415388337

अनुक्रमणिका

☞	मालती जोशी के कथा साहित्य में परिवार और समाज **डॉ0 कमला चौधरी**	1-4
☞	21वीं सदी के भारत में दूरस्थ शिक्षा की संभावनायें : संगीत के संदर्भ में **डॉ0 भूपेन्द्र कुमार**	5-7
☞	वैदिक ज्ञान का स्वरूप–यज्ञ **डॉ0 साधना राय**	8-10
☞	ब्राजील और भारत की WTO में भूमिका **डॉ0 विकास वर्मा**	11-15
☞	हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं में अनुवाद की समस्या **डॉ0 संध्या जैन**	16-18
☞	भारत–बांग्लादेश संबंध : भू–राजनैतिक दृष्टिकोण **शरद सिंह**	19-21
☞	वैदिक साहित्य एवं स्मृतियों में व्रत की अवधारणा **श्री पवन कुमार दूबे**	22-24
☞	Evolution of Panchayati Raj /Grass root Democracy in India: Ancient to Pre Independence Era **Dr. Het Ram Thakur**	25-30
☞	कौशल विकास में राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एन0एस0डी0सी0) की भूमिका तथा प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना की प्रगति का अध्ययन **भुवेन्द्र कुमार सिंह**	31-34
☞	धार्मिक आडम्बरों में जकड़ी नारी एवं उसकी व्यथा ('सेज पर संस्कृत' उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में) **आकांक्षा मिश्रा**	35-37
☞	मार्कण्डेय की कहानियों में ग्रामीण चेतना **पूर्णिमा**	38-40
☞	स्वतन्त्रता आन्दोलन में जन–जागरण करती माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय कविताएँ **बृजवाला**	41-44
☞	हिंदी नाटकों में स्त्री लेखन **ज्योति राय**	45-46
☞	तुलसी का समाज–चिन्तन **कु0 रूबी**	47-48
☞	कला के प्रतिमान और मुक्तिबोध की कविता **शशिकांत यादव**	49-52
☞	पंचायती राज व्यवस्था : महिलाओं की भूमिका **स्निग्धा कुमारी एवं डॉ0 सीमा सिंह**	53-57
☞	Role of Digitalization in Women Empowerment **Santosh Kumar Mishra**	58-60

पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल

मुख्य संपादक : डॉ. रत्नाकर नराले * सह संपादक : डॉ. राकेश कुमार दूबे



RAMAYAN

Our Golden Heritage

Jan-March 2021

स्वयं सत्यापित

पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल

NO I : JAN-MARCH 2021

Pustak Bharati Research Journal

Peer Reviewed Journal

Toronto, Canada

ISSN : 2562-6086

pustak.bharati.canada@gmail.com

www.pustak-bharati-canada.com

हिंदी, संस्कृत, कला, संगीत और संस्कृति प्रचार-प्रसारक
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक द्विभाषीय शोधपरक पत्रिका

A Research Oriented

Quarterly International Bilingual **Peer Reviewed** e-Journal

for the propagation of Hindi, Sanskrit, Arts, Music and Culture.

मुख्य संपादक : डॉ. रत्नाकर नराले Chief Editor (CEO) : Dr. Prof. Ratnakar Narale

सह संपादक : डॉ. राकेश कुमार दूबे Sub Editor (SEO) : Dr. Rakesh Kumar Dubey

आचार्य एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
लोकपुर (राज.)

स्वयं स्थापित

पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल

जनवरी-मार्च 2021 अंक

Ratnakar Narale, Toronto, Canada
संपादकीय

डॉ. दयानिधि सा
1. 21वीं सदी के सामाजिक सांस्कृतिक सरोकार और हिंदी भक्ति आंदोलन : संत कबीर के संदर्भ में

Satya Narain and Navin Chandra, Canada
2. ARCHAEOMETALLURGY IN THE RIGVEDA

डॉ. करुणा शर्मा
3. नवीन शोधपरक विषयों का बीजवपन करती पुस्तक 'मध्यकालीन कविता का पुनर्पाठ'

प्रदीप कुमार
4. आधुनिक कवियों के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

प्रो. हेमराज सुंदर, Mauritius
5. वर्तमान हिंदी साहित्य : दृष्टि और मूल्यांकन

डॉ. विनीता शुक्ला
6. महादेवी वर्मा के काव्य में बौद्ध दर्शन का प्रभाव

डॉ. कमला चौधरी
7. जन संवेदना के कवि : मुक्तिबोध

Zamaleeva Eleonora Ilsurovna, Uzbekistan
8. "Semantic analysis of the circumstances of the course of action"

ISSN-2250-2335

समीक्षन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के समीक्षन की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. लिस्ट में सम्मिलित जर्नल



शैलेश मटियानी की रचनाओं पर केन्द्रित

27

● वर्ष-14 ● अंक-27 ● अप्रैल-जून-2021 ● पृष्ठांक 65 ● मूल्य 100 रुपए

● प्रधान संपादक - देवेश ठाकुर ● संपादक - डॉ. सतीश पांडेय

हिन्दी विभाग

स्वयं सत्यापित

ISSN-2250-2335 Reg. No. MAHHIN / 2008 /26222

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की त्रैमासिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

प्रबंध संपादिका :
डॉ. रोहिणी शिवबालन
प्रधान संपादक-प्रकाशक :
डॉ. देवेश ठाकुर
संपादक :
डॉ. सतीश पांडेय
संयुक्त संपादक :
डॉ. प्रवीण चंद्र त्रिपुट
डिजिटल संपादक :
डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

संपादकीय-संपर्क :
बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा,
घाटकोपर (प.), मुंबई-400 084.
टेलिफोन : 25161446
Email: sameecheen@gmail.com
website-www.http//:
sameecheen com

विशेष :
'समीचीन' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबद्ध रचनाकारों के हैं। संपादक-प्रकाशक की उनसे सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय-क्षेत्र मात्र मुंबई होगा। सभी पदाधिकारी पूर्णरूप से अवैतनिक।

परीक्षक विद्वत मंडल : (Peer Review Team)

1) प्रोफेसर ताकेशी फुजिई
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
टोक्यो यूनिवर्सिटी फॉर फॉरेन स्टडीज, टोक्यो।
2) प्रो. (डॉ.) देवेन्द्र चौबे
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
3) प्रो. (डॉ.) वशिष्ठ अनूप
हिन्दी विभाग, काशी हिंदू विवि., वाराणसी, (उ.प्र.)
4) डॉ. नरेन्द्र मिश्र
हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास, विश्वविद्यालय, जोधपुर।
5) प्रो. (डॉ.) करुणाशंकर उपाध्याय
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई।
6) डॉ. अनिल सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई।
7) प्रो. (डॉ.) सदानंद भोसले
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे।
8) प्रो. (डॉ.) शरेशचंद्र चुलकीमठ
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़।
9) डॉ. अरुणा दुबलिश
पूर्व प्राचार्य, कनोहरलाल महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : देवेश ठाकुर ने प्रिंटोग्राफी सिस्टम (इंडिया) प्रा. लि., 13/डी, कुर्ला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नारी सेवा सदन रोड, नारायण नगर, घाटकोपर (प.) मुंबई-400 086 में छपवाकर बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (प.), मुंबई-400084 से प्रकाशित किया।

● प्रधान संपादक - देवेश ठाकुर ● संपादक - डॉ. सतीश पांडेय
● वर्ष-14 ● अंक 27 ● अप्रैल-जून-2021 ● पूर्णांक 65 ● मूल्य 100 रुपए
सहयोग : एक प्रति रु. 100/-, वार्षिक रु. 400/-, पंच वार्षिक रु. 2000/-

इस अंक में :

1.	अपने तईं	
2	शैलेश मटियानी : एक परिचय	6-7
3.	आई काथ कौ आमा ! आई काथ कौ तरुलता त्रिपाठी	8-11 12-18
4.	शैलेश के बाद शैलेश की याद डॉ. शेखर पाठक	19-28
5.	एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का अल्पविराम डॉ. हरिसुमन बिष्ट	29-39
6.	जीवन संघर्ष के प्रतीक - शैलेश मटियानी देवेंद्र मेवाड़ी	40-53
7.	प्रसंग शैलेश मटियानी श्री दामोदर दत्त दीक्षित	54-59
8.	शैलेश मटियानी : जो गोर्की होते-होते रह गए श्री. प्रदीप पंत	60-65
9.	शैलेश मटियानी की कहानियों में व्यक्त मन का यथार्थ डॉ. अनुपमा तिवारी	66-71
10.	अनुभव के भंडार सत्यान्वेषी शैलेश मटियानी डॉ. सत्यवती चौबे	72-79
11.	मटियानी की कहानियाँ - सर्वहारा का संकल्प-पत्र डॉ. संजीव कुमार	80-90
12.	शैलेश मटियानी की कहानियों में फुटपाथ श्री अमरदीप सिंह	91-101
13.	'मैं' और 'तुम' की सरहद लाँघती 'अर्धांगिनी' डॉ. कामना पण्ड्या	102-109
14.	मानवीय संवेदना के लेखक शैलेश मटियानी डॉ. कमला चौधरी	110-115
15.	शैलेश मटियानी की कहानियों में स्त्री संवेदना डॉ. अनिल सिंह	116-120

हिन्दी विभाग

पूर्वोत्तर प्रभा

(विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका)

जनवरी-जून 2021



प्रवेशांक

हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय

पूर्वोत्तर प्रभा

(विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्द्धवार्षिक पत्रिका)
जनवरी–जून, 2021



मूल्य

एक प्रति : 50 रुपये

सदस्यता

वार्षिक़ : 500 रुपये
त्रैवार्षिक : 1200 रुपये
आजीवन : 5000 रुपये

विदेशों के लिए (हवाई डाक)

एक अंक : 6 $
वार्षिक : 24 $
आजीवन : 300 $

संपादकीय संपर्क

हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय
गंगटोक, सिक्किम 737 101
दूरभाष : +91 96098-75813
ईमेल : purvottarprabha@gmail.com

'पूर्वोत्तर प्रभा' में प्रकाशित सभी लेखों पर संपादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री की सत्यता व मौलिकता हेतु लेखक स्वयं जिम्मेदार है। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके विरुद्ध कार्यवाही केवल गंगटोक, सिक्किम न्यायालय के अधीन होगी।

डॉ. चुकी भूटिया द्वारा हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक, सिक्किम 737 101 के लिए मधुराक्षर प्रकाशन, फतेहपुर, उ.प्र. से प्रकाशित प्रसारित।

संपादक : डॉ. चुकी भूटिया

संरक्षक

प्रो. अविनाश खरे
कुलपति, केंद्रीय विश्वविद्यालय सिक्किम, गंगटोक

प्रधान संपादक

डॉ. हरदीप सिंह
सह प्राध्यापक (हिंदी),
केंद्रीय विश्वविद्यालय सिक्किम, गंगटोक

संपादक

डॉ. चुकी भूटिया
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
केंद्रीय विश्वविद्यालय सिक्किम, गंगटोक

संपादक मंडल

डॉ. दिनेश साहू
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
केंद्रीय विश्वविद्यालय सिक्किम, गंगटोक

डॉ. प्रदीप त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
केंद्रीय विश्वविद्यालय सिक्किम, गंगटोक

परामर्श मंडल

प्रो. कबिता लामा
अधिष्ठाता, भाषा-साहित्य संकाय
केंद्रीय विश्वविद्यालय सिक्किम, गंगटोक

प्रो. ज्योति प्रकाश तामांग
प्रोफेसर, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग
केंद्रीय विश्वविद्यालय सिक्किम, गंगटोक

प्रो. मोहन
प्रोफेसर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. दिनेश कुमार चौबे
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय

प्रो. अवधेश कुमार
अधिष्ठाता, साहित्य विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

प्रो. सुधा जितेन्द्र
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
गुरुनानक देव विश्वविद्यालय

प्रो. दिलीप कुमार मेधी
प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय

प्रो. आर. एस. सर्राजु
प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय

प्रो. देवेन्द्र कुमार गुप्ता
प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

Visit us
https://cus.ac.in/

पूर्वोत्तर प्रभा

जनवरी–जून, 2021

बहुविषयक, विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्द्धवार्षिक पत्रिका

05. संपादकीय
डॉ.चुकी भूटिया

06. पर्यावरण एवं मानवाधिकार के प्रश्न : हिमालय एवं पूर्वोत्तर के विशेष सन्दर्भ में
अभिषेक सौरभ

11. जीवन की खुली पाठशाला को पढ़ाता : एक था ठुनठुनिया
प्रीति प्रसाद

15. नव-उपनिवेशिक संस्कृति के दौर में नव वामपंथी कविता
षेजू के

19. मुर्दहिया में चित्रित अविस्मृत लोक पात्र
कुमार सत्यम

22. साझी संस्कृति की विरासत और कितने पकिस्तान
जयंती सिंह

24. खिड़की के सहारे खुलता जीवन का रहस्य : दीवार में एक खिड़की रहती थी के संदर्भ में
शुभम

27. सेवाभाव से प्रेरित पत्रकारिता : गाँधी के विशेष संदर्भ में
नंदिनी हर्षदराय, डॉ.विनोद कु.पांडेय

32. केदारनाथ अग्रवाल के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ
ज्योति कुशवाहा

35. 'पूस की रात' कहानी की प्रासंगिकता
सबनम भुजेल

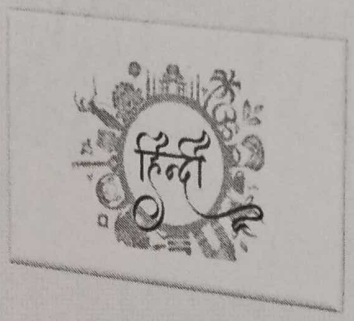
38. कहानी की तलाश में अभिव्यक्त आम व्यक्ति का अंतर्द्वंद्व
विद्या छेत्री

42. हिंदी सिनेमा में दलित जीवन की अभिव्यक्ति
कुलदीप सिंह

45. प्रेमचंद और हमारा समय
नीलम कुमारी

54. रामनरेश त्रिपाठी की सामाजिक प्रतिबद्धता
पुरन्दरदास

58. कवितावली में महामारी का परिदृश्य
डॉ. संतोष कुमार बघेल



62. स्वाधीन भारत के दो दशक पहले : हिंदी साहित्य में मोहभंग की स्थिति
डॉ. धंनजय

66. राजस्थान की संत वाणी में प्रकृति और पर्यावरण
डॉ. हरीश कुमार

70. संत कवि नितानंद के काव्य में विरह-वेदना
डॉ. अमित कुमार

73. गालो समाज का दर्शन
डॉ. तादाम रूती

77. कबीर पर दावेदारी
डॉ. संतोष कुमार

81. राजस्थान का लोक साहित्य : एक सांस्कृतिक विश्लेषण
डॉ. कमला चौधरी

85. असंगठित क्षेत्र में काम कर रही भारतीय महिलाओं की सुरक्षा
डॉ. मनोरमा गौतम

90. साहित्य और प्रकृति का अंतर्संबंध
डॉ. वासुदेवन शेष

94. अमेरिकी हिंदी साहित्य और अमेरिका में हिंदी शिक्षण की संभावनाएं एवं चुनौतियां
प्रो. इला प्रसाद

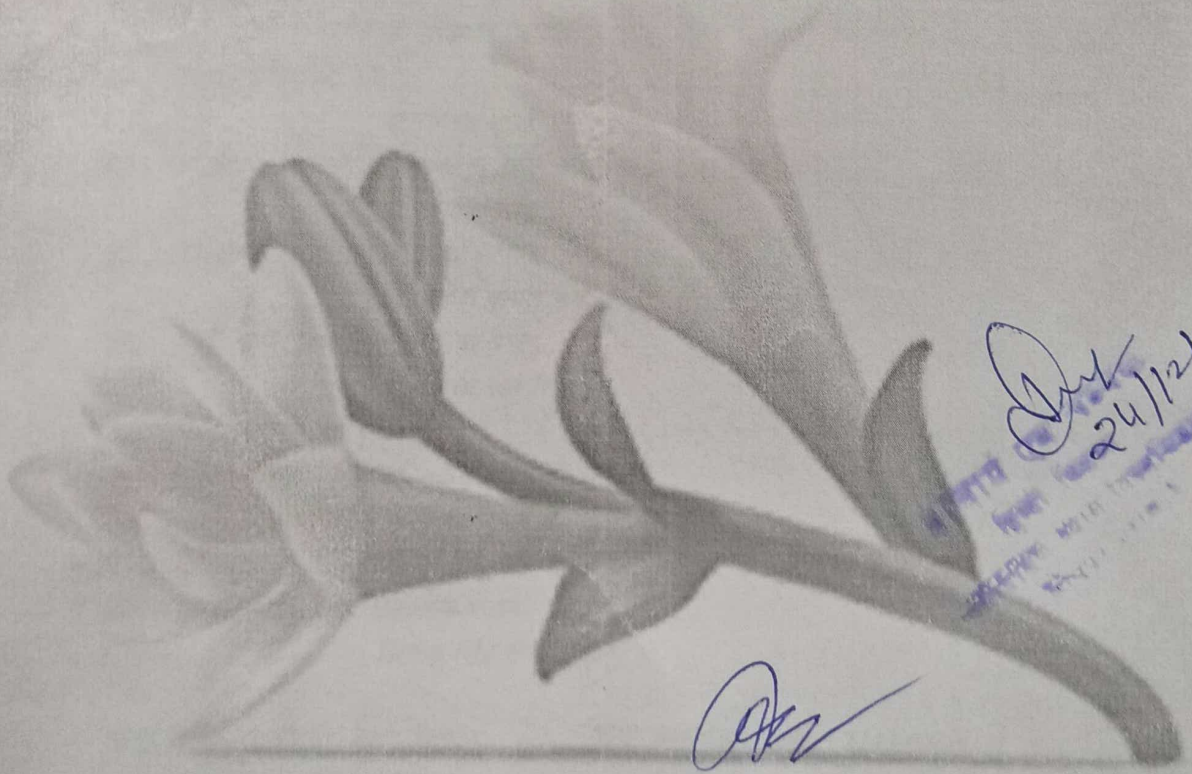
98. विभाजन की त्रासदी और स्त्री
प्रो. शंभु गुप्त

106. स्थानीय लोकगीतों में झूलता हुआ भविष्यादर्शी सवेरा
डॉ. आरिफ जमादार

ISSN : 2249-930X
(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

हिंदी अनुशीलन

त्रैमासिक



प्रधान संपादक
प्रो० नंदकिशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो० नरेन्द्र मिश्र

वर्ष 62 दिसम्बर 2020 अंक 4

15. केदारनाथ अग्रवाल का सौन्दर्य प्रेम 106
अल्पना कुशवाहा
16. भाषा में मुहावरे एवं लोकोक्तियों का महत्व 111
डॉ. वंदना मिश्रा
17. लोक संस्कृति के दृष्टि : अवधी लोकगाथाएँ 116
डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव
18. महाकवि प्रसाद एवं निराला के प्रयाण गीतों की सांस्कृतिक चेतना 121
सौरभ उपाध्याय
19. महात्मा गाँधी का शिक्षा-चिंतन 128
डॉ. प्रीति भट्ट
20. अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति की धार्मिक लोकगाथाओं का समाज-सांस्कृतिक महत्व 132
ईंग परमे, ओकेन लेगो
21. मंगलेश डबराल के काव्य में सांस्कृतिक चिन्तन 143
सुरेश कुमार मिश्र
22. हिंदी साहित्य के विकास में 'नई कविता' पत्रिका का योगदान 148
डॉ. हरेकृष्ण तिवारी
23. समय, समाज और स्त्री 153
डॉ. किरण शर्मा
24. आंचलिक उपन्यासों की परम्परा में अलग-अलग वैतरणी का वैशिष्ट्य 157
डॉ. अजीत सिंह
25. सांस्कृतिक पुनर्जागरण की कथा 'महासमर' 161
डॉ. राजेश कुमार गर्ग
26. हिन्दी सूफी काव्य पर नाथपंथ का प्रभाव 166
डॉ. विनम्र सेन सिंह
27. पोषित कल्पना प्रवास में 172
डॉ. कीर्ति माहेश्वरी
28. अनुसंधान कदाचार के मानविकी विषयों के साहित्य की समीक्षा 177
प्रो. हरदीप सिंह
29. स्वास्थ्य पत्रकारिता : रचनात्मक लेखन 181
जितेन्द्र सिंह राजपुरोहित

पीयर रिव्यूड/यू.जी.सी. केयर लिस्टेड **हिंदी अनुशीलन ISSN : 2249-930X / 4**

ISSN - 2348-2397
UGC CARE LISTED JOURNAL
IIS
शोध सरिता
January-March, 2021
Vol. 8, Issue 29
Page Nos. 157-160
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

डाकू जीवन के विविध परिदृश्य और 'डांग' उपन्यास

डॉ0 कुलदीप सिंह मीना*

शोध सारांश

उपन्यासकार हरिराम मीणा ने 'डांग' उपन्यास में डांग अंचल में पनपती डाकुओं की समस्याओं का चित्रण किया है। दस्यु प्रवृत्ति के पनपने के पीछे सामाजिक एवं भौगोलिक कारण तो था ही, साथ ही सरकार की उदासीनता और प्रशसनिक लापरवाही भी प्रमुख रूप से जिम्मेदार रही। 'डांग' का आम आदमी इन्हीं डाकुओं के भय और आतंक के साये में जीने को विवश है। डाकुओं कर प्रवृत्ति के साथ ही अंचल में अशिक्षा, बेरोजगारी, भुखमरी, युवाओं की दिशाहीनता आदि का यथार्थ चित्रण किया है। इन सभी समस्याओं के कारण 'डांग' अंचल आज भी पिछड़ा हुआ है। राजनीति और प्रशासन का भ्रष्टाचार सामने आता है। परिणामस्वरूप दस्यु प्रवृत्ति पनपती दिखाई देती है। अतः डांग उपन्यास में डाकुओं की समस्या के साथ–साथ आम जन की समस्याओं को उजागर करने का सफल प्रयास किया गया है।

Keywords : दस्यु, संरक्षण, उन्मुख, संघर्ष, वैमनस्यता, बागी, धाडेती, समर्पण, पुर्नवास, स्वास्थ्य, उन्मूलन।

राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र को भौगोलिक आधार पर माड़, जगरोटी, आंतरी, उबाल एवं छोई, डांग आदि स्थानीय आंचलिक नामों से पुकारा जाता है। इन्हीं में एक 'डांग' है जो कि मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तरप्रदेश के पठारी और बीहड़ क्षेत्र को अभिहित करता है। वैसे यह 'डांग' क्षेत्र डाकुओं के लिए अधिक जाना जाता रहा है। इसके बीच से चम्बल नदी बह रही है। जिससे इस अंचल को लोग 'चम्बल के बीहड़' का नाम भी देते रहे हैं। इस क्षेत्र से वरिष्ठ साहित्यकार हरिराम मीणा का उपन्यास 'डांग' हिन्दी जगत में दस्तक देता हुआ सामने आता है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि डाकुओं पर तो केन्द्रित है ही साथ ही डांग अंचल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनितिक और आर्थिक पक्ष को मजबूती से अभिव्यक्त किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हम निरंतर विकास के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। विकास के नाम पर सरकारों द्वारा अनेक योजनाएँ और नीतियाँ बनाई जा रही हैं। इनमें से कुछ धरातल पर आती हैं, कुछ कागजों की खुशबु बनते हुए भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती हैं। लोगों के हिस्से में आता है केवल छलावा। यह उपन्यास इसी भौतिक विकास की पोल तो खोलता ही है साथ ही क्षेत्र में अशिक्षा, बेरोजगारी, पिछड़ापन आदि को अभिव्यक्त करता है, जो 'डांग' में पनपती दस्यु प्रवृत्ति के लिए जिम्मेदार है।

इस उपन्यास में लेखक ने 'डांग' के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही वहाँ के सामाजिक परिदृश्य का बेहतरीन चित्र प्रस्तुत किया। एक तरफ लोग सामाजिक सद्भाव, समरसता के साथ रहते आये हैं, वहीं दूसरी ओर इसी सद्भाव से निकलता है जबरदस्त जातीय संघर्ष। इस जातीय संघर्ष के कारण दस्यु प्रवृत्ति को संरक्षण मिलता है। ये डाकू अपने को बागी कहते हैं। दूसरा नाम धाड़ेती भी है, जो पहले से ऐलान कर लूट–पाट करते रहे हैं। लेकिन ये सब नामकरण दस्यु प्रवृत्ति में लिप्त होने के बाद होते हैं। सामाजिक संरक्षण के बीच ये डाकू जातीय नायक भी बनने लगते हैं। सामाजिक दृष्टि से इस अंचल में सभी जातियाँ निवास करती हैं। लेकिन मीणा और गूजर जाति के साथ राजपूत भी काफी बहुलता में निवासरत रहे हैं। चम्बल के इन बीहड़ों में व्यक्ति इन्हीं जातियों के बीच से ज्यादा निकले हैं। शुरूआत में भले ही वे अपने घर–परिवार के छोटे–छोटे झगड़ों के प्रतिशोध के रूप में बागी हुए और दस्यु प्रवृत्ति की ओर उन्मुख हुए किन्तु कालांतर में उन्हें जाति का संरक्षण मिलने लगता है, जिससे जातिवाद का जहर यहाँ बहुत ज्यादा बढ़ने लगा है। जातिवाद के इसी संघर्ष को लेखक हरिराम मीणा ने 'डांग' उपन्यास में चित्रित किया है।–"दोनों गिरोह के आतंक के मारे मीणा और गूजर जातियों के बीच दरार पड़ने लग गयी। अपनी–अपनी जाति के गिरोहों को पनाह तक देने की बातें सुनने को मिलने लगी। इस स्थिति के जिम्मेदार दो कारण रहे, गिरोहों का भय और जातिवाद

*असिस्टेन्ट प्रोफेसर (हिन्दी) जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

ISSN - 2229-3620
UGC CARE LISTED JOURNAL
KIS
शोध संचार बुलेटिन
January-March, 2021
Vol. 11, Issue 41
Page Nos. 33-37
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

समकालीन हिन्दी कविता में चित्रित आदिवासी जीवन संघर्ष और चुनौतियाँ

❐ डॉ0 कुलदीप सिंह मीना*

शोध सारांश

भारत के सामाजिक परिदृश्य में हलचल के कारण तमाम सामाजिक आन्दोलन सामने आये। जिनका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा। परिणामस्वरूप स्त्री विमर्श, दलित साहित्य के साथ आदिवासी चेतना से युक्त आदिवासी साहित्य साहित्य पटल पर दस्तक देकर सामने आया। शुरूआती दौर में आदिवासी साहित्य की लम्बी मौखिक परम्परा सामने आती है लेकिन इससे आगे अब लिखित रूप में साहित्य की विविध विधाओं के रूप में सामने आ चुका था। आज के इस भौतिक युग के विकासवादी दौर में आदिवासी समाज स्वतः ही सामने आता है। समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी कवियों ने विकास की इस अवधारणा से आदिवासी समुदायों के सामने उपजे शोषण, विस्थापन का दर्द, अस्तित्व एवं अस्मिता के संकट को अभिव्यक्त किया है। इसके साथ ही उनके जीवन संघर्ष और उससे उत्पन्न हुई चुनौतियों का सामना करने के लिए चेतना जाग्रत की है। ऐसे कवियों में वाहरू सोनवणे, हरिराम मीणा, निर्मला पुतुल, अनुज लुगुन, महादेव टोप्पो, ग्रेस कूजूर, वन्दना टेटे, ग्लैडसन डुंगडुंग, सुषमा असुर, उज्ज्वला ज्योति लग्गा, शांति खलखो प्रमुख हैं। जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से आदिवासी समुदायों के साथ होने वाले शोषण, तथाकथित विकास से उपजी विस्थापन की पीड़ा, अपने अस्तित्व और अस्मिता पर हुए प्रहार से पैदा हुई चुनौतियों से संघर्ष कर मानवीय पक्षों की रक्षा करते हुए संवेदनाओं के साथ आदिवासी समुदाय में चेतना जाग्रत करने का प्रयास किया है।

Keywords : अस्तित्व, अस्मिता, विस्थापन, शोषण, नैसर्गिक, अधिग्रहण, चेतना, भौम, वर्चस्वमूलक, स्तब्ध।

बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत में कई ऐसे सामाजिक आन्दोलनों का उभार हुआ। जिनके कारण भारतीय सामाजिक परिदृश्य में हलचल होने लगी थी। अब तक समाज के हाशिए पर रहे स्त्री, दलित और आदिवासी अपने अस्तित्व और अस्मिता को लेकर उठ खड़े हुए एवं तथाकथित मुख्य धारा के समाज के सामने अनेक प्रश्न खड़े कर दिये। इन अपेक्षित वर्गों के समक्ष अब अपनी पहचान का संकट था। जिनका लगातार शोषण किया जा रहा था। इस संकट के पीछे अपने – आप को सभ्य और मुख्य धारा का समाज कहने वाला वर्ग था। अब ये उपेक्षित और शोषित वर्ग शिक्षित होने के साथ–साथ जागरूक होने लगा था। जिससे इनका शोषण और भेदभावपूर्ण रवैये के विरूद्ध संघर्ष उठ खड़ा हुआ। इन वर्गों के सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलनों के साथ साहित्यिक आन्दोलन भी सामने आये। स्त्री विमर्श और दलित साहित्य उसी चेतना का परिणाम है। इसी समय आदिवासी चेतना से युक्त आदिवासी साहित्य की साहित्य जगत में अनुगूँज सुनाई दे रही थी।

आदिवासी साहित्य की मौखिक परम्परा बहुत पुरानी रही है लेकिन उसका लिपिबद्ध होना अभी शेष था। हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के समकालीन दौर में एक और जहाँ स्त्रीवादी साहित्य, दलित साहित्य विविध विधाओं के माध्यम से हिन्दी जगत में अपनी पहचान बना चुका था वहीं दूसरी ओर आदिवासी साहित्य अपनी मौखिक परम्परा से आगे बढ़कर लिखित रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा था। आदिवासी साहित्य अब विभिन्न विधाओं कहानी, उपन्यास, कविता, यात्रावृतान्त आदि में अपने साथ हुए अन्याय, शोषण और अस्तित्व और अस्मिता पर आये संकट को चुनौती देता हुआ संघर्ष के साथ नई चेतना का प्रवाह करते हुए सामने आया।

औपनिवेशिक युग के बाद आए औद्योगिकरण ने भौतिक विकास पर जोर दिया। भौतिक विकास के इस अंधानुकरण से सबसे ज्यादा आदिवासी समाज प्रभावित हुआ। अभी तक आदिवासी जल, जंगल, जमीन के संरक्षण के साथ अपना नैसर्गिक जीवन जी रहा था। विकासवादी इस दौर में विकास के नाम पर गैर–आदिवासी (दिकू) उनके संसाधनों को छीनने लगे। जिससे उनका जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ। आदिवासी समाज के बीच

*असिस्टेन्ट प्रोफेसर (हिन्दी) जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

हिंदी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

वर्ष 62 अप्रैल-जून तथा जुलाई-सितम्बर 2020 अंक 2-3 ISSN : 2249-930X

परामर्शदाता
प्रो. कमल किशोर गोयनका
प्रो. सुरेन्द्र दुबे
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रधान संपादक
प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो. नरेन्द्र मिश्र

संपादन सहयोग
डॉ. निर्मला अग्रवाल
प्रो. मीरा दीक्षित

भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग

हिंदी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

ISSN : 2249-930X

प्रकाशक : डॉ. निर्मला अग्रवाल, प्रबंधमंत्री, भारतीय हिंदी परिषद्
हिंदी-विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
Website : www.bhartiyahindiparishad.com
Email : hindianusheelan@gmail.com

मूल्य : ₹ 100.00

अक्षर संयोजन : राजेश शर्मा, मो. : 9450252918
मुद्रक : प्रभा कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिंटर्स, विश्वविद्यालय मार्ग, प्रयागराज

29. मैथिलीशरणगुप्त के काव्य में गांधी चिन्तन 199
डॉ. प्रणु शुक्ला
30. भारतीय साहित्य में गांधी का प्रदेय 203
डॉ. कमला चौधरी
31. शान्तिदूत महात्मा गांधी और टॉलस्टॉय 212
डॉ. राहुल पाण्डेय
32. गाँधीवादी दर्शन और प्रेमचंद का कथा साहित्य 218
डॉ. प्रेमसिंह
33. महात्मा गाँधी के आदर्शों का कहानी और नाटक विधा पर प्रभाव 223
डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव
34. लोक गीतों में गाँधी 228
डॉ. महीपाल सिंह राठौड़
35. निर्भीक पत्रकारिता के महामानव गांधीजी 239
डॉ. शशिकांत मिश्र
36. मोहन से महात्मा तक 246
जितेन्द्र कुमार यादव
37. वर्तमान भारतीय परिदृश्य एवं गांधी जी के विचार 251
डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल'
38. कुबेरनाथ राय की दृष्टि में गाँधी 260
डॉ. राजेश कुमार
39. हिंदी प्रचार में महात्मा गाँधी का अवदान 267
नवनीत आचार्य
40. गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित प्रमुख हिन्दी उपन्यासकार 273
डॉ. महात्मा पाण्डेय
41. समकालीन कविता में अभिव्यक्त भारतीय सभ्यता एवं गांधी दर्शन 278
डॉ. बृजेश कुमार पाण्डेय
42. महात्मा गांधी के जीवन-संघर्ष का जीवन्त दस्तावेज-पहला गिरमिटिया 291
डॉ. आनन्द प्रकाश गुप्ता
43. सियाराम शरण गुप्त के काव्य में गांधीदर्शन 296
डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

बनास जन
मई 2021

अव्यावसायिक
अंक 43, वर्ष 13

परामर्श : प्रो. नवलकिशोर
प्रो. काशीनाथ सिंह
डॉ. के. सी. शर्मा
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
प्रो. माधव हाड़ा

संपादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला-पक्ष : निकिता त्रिपाठी, प्रयागराज

सहयोग राशि : 100 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–125 रुपये
200 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–225 रुपये
5000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
8000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)
The Draft/Cheque may please be made in favour of 'Banaas Jan'
OurA /C Details : SBI C/A No.61159024776
IFSC Code : SBIN0032036
Branch name : State Bank of India, D L DA V Model School, BN Block
Shalimar Bagh, New Delhi-110088

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सअप : +91–8130072004 (केवल संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
A Collection of Literature
Language : Hindi

ISSN 2231–6558

लम्बी कविताएँ

सिन्दूर की डिबिया — आशीष त्रिपाठी — 121
आजादी का गान उठा है — राकेश रंजन — 126

कथेतर

पेरिस : लौट आने के बाद की प्यास — देवेश पथ सारिया — 131
मनोहर महाजन की कथा — दिनेश चौधरी — 138
गलतियाँ करना सीखो — शशांक — 145
ममी की दो नायाब सहेलियाँ — मृदुला गर्ग — 152
लाल अग्नि की रोशनी — सुधीर विद्यार्थी — 165
मिश्रबन्धु : रामचन्द्र शुक्ल द्वारा 'मारे गये गुलफाम' — कुमार पंकज — 172
एक किराएदार के कुछ मीठे-कड़वे अनुभव — विष्णु नागर — 177
बनस्थली डायरी — सुमंत पंड्या — 183

हमारा परिदृश्य और नया साहित्य

यूरोप में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया और आधुनिकता की अवधारणा — संजय कुमार — 186
बीहड़ जीवन की लय 'कुटज' — रचना सिंह — 196
जीवन के कटुतम यथार्थ का निर्मम अवलोकन — अंकिता तिवारी — 201

शोध

काशी प्रसाद जायसवाल : संक्षिप्त परिचय और यात्रा-वृत्तांत — रतनलाल — 207
स्त्री केंद्रित पत्रिकाओं की परम्परा और स्त्री मुक्ति में उनका योगदान — गरिमा सिंह — 218
स्त्री चेतना की अभिव्यक्ति और भारतेंदुयुगीन हिंदी नाटक — गोल्डी — 232

रंगमंच

थियेटर — रणवीर सिंह — 239

पुस्तक समीक्षा

पारसी थियेटर की परम्परा में राधेश्याम कथावाचक — जुगेश गुप्ता — 247
कामयाबियों पर सवाल — रजत कुमार — 253
संस्मरणों में इलाहाबाद — श्रद्धा त्रिपाठी — 257
कहत नामवार सुनो भाई हिन्दियो! — आसिम अंसारी — 262
स्कूल, समाज और शिक्षा को समर्पित जीवन — शुभनीत कौशिक — 271
पुरोधा लेखक का उम्दा रचना संचयन — लोकेश कुमार गुप्ता — 274
सौ वर्षीय सिनेमा के कुछ पक्षों की चर्चा — अजय कुमार शर्मा — 277
लोक के प्रथम शास्त्रप्रणेता : देवीलाल सामर — महीपाल सिंह राठौड़ — 281
आदिवासी दर्शन की ओर — महादेव टोप्पो — 283

चौमासा

वर्ष-37, विशेषांक 117
नवम्बर, 2021-फरवरी, 2022

प्रधान सम्पादक
डॉ. धर्मेन्द्र पारे

सम्पादक
अशोक मिश्र

मदीना सिंहावा
17.11.2021

जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल का प्रकाशन

मदीना सिंहावा

ISSN 2249-5479
©स्वत्वाधिकार सुरक्षित

सम्पर्क
जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल-462002
फोन/ फैक्स : 0755-2661948, 2661640
E-mail : mplokkala@rediffmail.com,
mptribalmuseum13@gmail.com
web. : www.mptribalmuseum.com

मूल्य
एक प्रति बीस रुपये
वार्षिक सदस्यता - पचास रुपये
आजीवन सदस्यता - पन्द्रह सौ रुपये
चौमासा का वार्षिक शुल्क अनुषंग पुस्तिका के साथ सौ रुपये

प्रचार/प्रसार
प्रवीण गावण्डे - (मो. 9827351093)

शब्दांकन
जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

मुद्रण
मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

- चौमासा में प्रकाशित सामग्री लेखकों के अपने कार्य और विचार हैं। आवश्यक नहीं कि अकादमी उससे सहमत हो।
- पत्रिका और प्रकाशन से संबंधित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्यक्षेत्र भोपाल रहेगा।

निदेशक, जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्- भोपाल मुद्रक, प्रकाशक द्वारा मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल से मुद्रित कराकर जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स- भोपाल से प्रकाशित।

सम्पादक-अशोक मिश्र

अनुक्रम

स्मृतियों में घुमन्तू : बणजारे, नट, कालबेलिया और भवाई / डॉ. महेन्द्र भानावत / 7

पारधी : वाचिक परंपरा / महेन्द्र कुमार मिश्रा / 22

बैल पारधियों की मौखिक परंपरा / अर्चना शर्मा / 31

बहुरूपिया : असंख्य किरदार जीने वाला इंसान / अश्वनी शर्मा / 40

बंजारा : वाचिक परम्पराएँ / प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा / 44

वाणिज्य और घुमन्तू समुदाय / डॉ. बीना सेंगर / 56

बामनिया-बणजारा समुदाय / डॉ. पूरन सहगल / 62

घुमंतू भराड़ियों का जीवन / उज्ज्वला समाधान डांगे / 67

बहुरूपियों की कलाएँ / डॉ. श्रीकृष्ण काकड़े / 73

नगरीय बस्ती से दूर बसा करते थे बागरी / उमा / 77

गोंधली : रीति-रिवाज़ और संस्कृति / सूर्यकांत भगवान भिसे / 81

बंजारा और टांडा संस्कृति / डॉ. टीकमणि पटवारी / 89

देवार और उसकी वाचिक परम्परा / डॉ. पीसी लाल यादव / 93

बसदेवा : जीवनशैली, गाथा और भिक्षाटन / राम कुमार वर्मा / 101

अर्ध घुमन्तू घट्या / डॉ. भारती जयप्रकाश हाड़ा / 108

कुचबंधियों की पुरखा-संस्कृति / डॉ.लक्ष्मीकान्त चंदेला / 112

दिल्ली में बसा वाघरी समाज / डॉ. विभा ठाकुर / 116

तिरमली नंदिवाले : घुमंतू समुदाय / प्रो.बालासाहेब अप्पा फूलमाली / 122

झोला डंडा अलख उच्चारण / पूजा सक्सेना / 125

कालबेलिया : सांस्कृतिक मान्यताएँ / डॉ. महीपाल सिंह राठौड़ / 128

बंजारा गीत / डॉ. गणपत राठोड़ / 133

बंजारा लोककलाएँ : एक मूल्यांकन / ललिता लोधा / 138

सपेरों की वस्त्र कला गुदड़ी / नीलिमा गुर्जर / 141

वाघरी की सामाजिक व्यवस्था / इन्द्र नारायण ठाकुर / 145

कंजर समुदाय की परम्परा- प्रियंका तिवारी / 148

भोपाल का किन्नर समुदाय / सीमा बिसंदर / प्रो. डॉ. रुचि घोष दस्तिदार / 152

(7)

राजस्थानी लोक देवी-देवता : परंपरा अर साहित्यिक दीठ

संपादक

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

बाबा रामदेव शोधपीठ

अर

राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

❑ प्रकाशक :

बाबा रामदेव शोधपीठ

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

अर

राजस्थानी ग्रंथागार

प्रकाशक एवं वितरक

पैलौ माळौ, गणेश मंदिर रै सांम्ही

सोजती गेट, जोधपुर (राजस्थान)

फोन : 0291-2657531, 2623933 (का.)

E-mail : info@rgbooks.net

Website : www.rgbooks.net

❑ ISBN : 978-93-91446-75-8

❑ © सगळा इधकार संपादक रा

❑ पैलौ संस्करण : 2021

❑ मोल : ₹ 300/- (तीन सौ रिपिया)

❑ आवरण चितराम : राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी, जोधपुर में संग्रहीत
श्री हिमतरामजी व्यास, पोकरण रौ बणायोड़ौ लोक देवता
बाबा रामदेवजी रौ चितराम

❑ छापणहार :
जांगिड़ कंप्यूटर्स, जोधपुर 6376545732

RAJASTHANI LOK DEVI-DEVTA : PARMPARA AR SAHITYIK DEETH

Edited by Dr. Gaje Singh Rajpurohit

First edition : 2021

Price : 300/-

विगत

खण्ड-क

1. आस्था का आधार राजस्थान की लोक देवियां
–डॉ. मनोहरसिंह राठौड़ ... 21

2. राजस्थानी लोक में पांच पीर : एक अनुशीलन
–डॉ. आईदानसिंह भाटी ... 27

3. मेहाजी मांगळिया : भ्रामक धारणाएं व निराकरण
–गिरधरदान रतनू 'दासोड़ी' ... 41

4. गोगादेव चौहान : लोक अवधारणा
–भंवरलाल सुथार ... 53

5. लोक देवता जुंझारजी : एक अनुशीलन
–डॉ. महीपाल सिंह राठौड ... 57

6. पिछमधरा के पीर : बाबा रामदेवजी
–डॉ. महेन्द्रसिंह तंवर ... 67

7. लोक परम्परा में लोक पूज्य देवियां
–डॉ. धनंजया अमरावत ... 75

8. लोकमानस में तल्लीनाथ : एक अनुशीलन
–डॉ. लक्ष्मणसिंह गड़ा ... 82

9. सिद्ध अलूनाथजी का सामाजिक एवं धार्मिक चिंतन
–डॉ. किरण चारण ... 92

10. चारणों की आराध्य देवियां और करणी मढ़ की विशेषताएं
–अशोक कुमार चारण ... 96

लोक साहित्य की रूपरेखा

लेखक
डॉ. महीपाल सिंह राठौड़

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की विश्वविद्यालय-स्तरीय ग्रन्थ-निर्माण योजना के अन्तर्गत, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर द्वारा प्रकाशित।

प्रथम संस्करण : 2021
(प्रतियाँ 1100)

लोक साहित्य की रूपरेखा
ISBN: 978-93-90571-550

मूल्य : 240.00 रुपये मात्र

© सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन

प्रकाशक :
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
प्लाट नं. 1, झालाना सांस्थानिक क्षेत्र
जयपुर-302 004
दूरभाष : 2711129, 2710341
Web-Site : w.w.w. rajhga.com

लेजर कम्पोजिंग :
क्रियेशन
सरदार पटेल मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर
दूरभाष : 0141-4911189

मुद्रक :
प्रिन्ट ओ लैण्ड
जयपुर

लोक संस्कृति और साहित्य

लोक संस्कृति के विविध आयाम

महीपाल सिंह राठौड़

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

ISBN 978-93-5491-112-5

पहला संस्करण : 2021 *(शक 1943)*

© लेखकाधीन

Lok Sanskriti ke Vividh Aayam *(Original Hindi)*

₹ 190.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

विश्वविद्यालय स्तरीय पुस्तक प्रकाशन संस्थान

(राजस्थान सरकार का उपक्रम)

641 samiksha report

क्रमांक/रा.हि.ग्र.अ./प.

दिनांक : 20-9-21

उपस्थिति प्रमाण–पत्र

डॉ. महीपाल सिहं राठौड़,
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभागं,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राजस्थान)

प्रमाणित किया जाता है कि डॉ. महीपाल सिहं राठौड़, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान) ने अकादमी द्वारा आयोजित भाषा विषयनामिका की बैठक में आज दिनांक 20.092021 को अकादमी में उपस्थित हुए है।

(डॉ. बी. एल. सैनी)
निदेशक

प्लॉट नं. 1, झालाना सांस्थानिक क्षेत्र, आर.टी.ओ. के सामने, जयपुर-302004
फोन : 0141-2711129, फैक्स नं. : 0141-2710341
ई-मेल : rajhindigranth@gmail.com • वेबसाईट : www.rajhga.com

महीपाल सिंह राठौड़

चौमासा

वर्ष-36, विशेषांक 113
जुलाई-अक्टूबर, 2020



प्रधान सम्पादक
डॉ. धर्मेन्द्र पारे

सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल का प्रकाशन

ISSN 2249-5479
©स्वत्वाधिकार सुरक्षित

सम्पर्क
आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल-462002
फोन/ फैक्स : 0755-2661948, 2661640
E-mail : mplokkala@rediffmail.com,
mptribalmuseum13@gmail.com
web. : www.mptribalmuseum.com

मूल्य
एक प्रति बीस रुपये
वार्षिक सदस्यता - पचास रुपये
आजीवन सदस्यता - पन्द्रह सौ रुपये
चौमासा का वार्षिक शुल्क अनुषंग पुस्तिका के साथ सौ रुपये

प्रचार/प्रसार
प्रवीण गावण्डे - (मो. 9827351093)

आवरण छायाचित्र सौजन्य : श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

शब्दांकन
आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

मुद्रण
मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

- चौमासा में प्रकाशित सामग्री लेखकों के अपने कार्य और विचार हैं। आवश्यक नहीं कि अकादमी उससे सहमत हो।
- पत्रिका और प्रकाशन से संबंधित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्यक्षेत्र भोपाल रहेगा।

निदेशक, आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्- भोपाल मुद्रक, प्रकाशक द्वारा मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल से मुद्रित कराकर आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स- भोपाल से प्रकाशित।

सम्पादक-अशोक मिश्र

हिन्दी विभाग
जोधपुर (राज.)

इस अंक में

महामारियों का लोक संस्कृति पर प्रभाव / सूर्यप्रसाद दीक्षित / 7

महामारी और लोक संस्कृति / श्यामसुन्दर दुबे / 14

लोक में व्याधियाँ और कला संसार / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय / 20

घर-घर बकरी, घर-घर ऊँट / डॉ. महेन्द्र भानावत / 31

महामारी का घाम और लोक संस्कृति की छाँह / डॉ. श्रीराम परिहार / 41

महामारियों का लोक संस्कृति पर प्रभाव / कैलाश मण्डलेकर / 47

महामारी : बीमारी और लोक / पवन अग्रवाल / 52

महामारी : विविध संदर्भ / डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्र / 60

असमिया संस्कृति : महामारियों का प्रभाव / डॉ. हरेराम पाठक / 68

झारखण्ड : लोक संस्कृति पर महामारियों का प्रभाव / डॉ. सावित्री बड़ाईक / 71

निमाड़ : देवी-देवता और महामारियाँ / प्रदीप जिलवाने / 78

केरल : महामारी से उत्पन्न लोक परम्पराएँ / डॉ. प्रिया ए. / 81

राजस्थान : महामारियों का लोक संस्कृति पर प्रभाव / डॉ. महीपाल सिंह राठौड़ / 84

महाराष्ट्र : महामारी और लोककलाएँ / डॉ.श्रीकृष्ण काकड़े / 88

कार्बी समुदाय और वैश्विक महामारी/ अन तेरन / 97

महामारियों में 'माड़' औषधि / डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला / 103

मिथिलांचल में महामारियों की लोक देवियाँ / विभा ठाकुर / 108

लोक संस्कृति पर महामारियों का प्रभाव / डॉ. बी. नन्दा जागृत / 113

असम : लोक संस्कृति पर महामारी का प्रभाव / कविता कर्मकार / 116

अरुणाचल : जनजातीय समाज और महामारी / जमुना बीनी /119

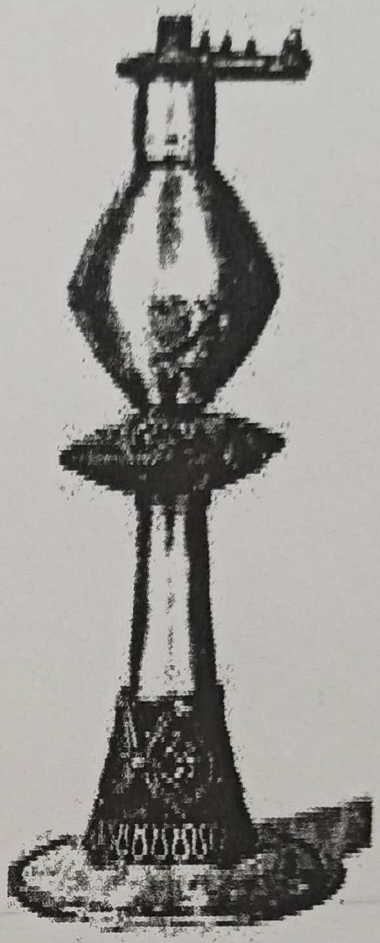
कोल्हान की संस्कृति और महामारी / सुभाष चन्द्र महतो / 126

रोग और लोक चिकित्सा / डॉ. ऐश्वर्या अवस्थी / 129

महामारी का लोक संस्कृति पर प्रभाव / डॉ. शीला ठाकुर / 133

परिसंवाद से अनुभूत / माधवी लता दुबे / 135

परिसंवाद के बारे में / सुमन मिश्रा / 137



GOVT. OF INDIA RNI NO. UPBIL/2014/56766

ISSN 2348-2397

UGC Approved
Care Listed Journal

Shodh Sarita

PUBLISHED BY

SANCHAR
Educational & Research Foundation

Chief Editorial Office
448/119/76, Kalyanpuri, Thakurganj Chowk,
Lucknow, Uttar Pradesh - 226003
+91-94155 78128 | +91-79051 90645
serfoundation123@gmail.com | serresearchfoundation.in

Certificate of Publication

Ref. No.: **SS/2021/KIS17**

Date: **29-03-2021**

Authored by

डॉ0 प्रवीण चन्द
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

for the Research Paper titled as

दलित हिन्दी आत्मकथाओं में चित्रित आत्मसंघर्ष

Published in

Shodh Sarita, Volume 8, Issue 29, January to March 2021

Dr. Vinay Kumar Sharma
Editor in Chief
M.A., Ph. D., D.Litt. - Gold Medalist
Awarded by The President of India 'Rajbhasha Gaurav Samman'

Shodh Sarita
EDITOR IN CHIEF
DR. VINAY KUMAR SHARMA

ISSN - 2348-2397
UGC CARE LISTED JOURNAL
KIS
शोध सरिता
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
January-March, 2021
Vol. 8, Issue 29
Page Nos. 65-67

दलित हिन्दी आत्मकथाओं में चित्रित आत्मसंघर्ष

डॉ० प्रवीण चन्द*

शोध सारांश

वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य लेखन में कथेतर गद्य में अनेक विधाओं का लेखन हो रहा है। इन विधाओं में आत्मकथा लेखन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आत्मकथा लेखन लेखक के स्वयं के जीवन में जीये पहलुओं की साहित्यिक अभिव्यक्ति करता है। हिन्दी आत्मकथा लेखन में दलित लेखकों ने भी अपनी आत्मकथाएं लिखकर साहित्य में अपना स्थान दर्ज किया है। दलित लेखकों की आत्मकथाएं उनके द्वारा भोगे हुए जीवन का यथार्थ चित्रण ही नहीं अब तक न लिखा इतिहास भी है। यह चित्रण दलित समाज की यथार्थ अभिव्यक्ति है, जिसमें उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक परिस्थितियों का चित्रण हुआ है।

Keywords : आत्मकथा, आत्मसंघर्ष, अन्याय, अत्याचार, तिरस्कृत, यथार्थ, वर्चस्वाद आदि।

साहित्य अनेक प्रकार की विधाओं को अपने में समाहित किए हुए हैं। गद्य साहित्य में जहां उपन्यास, कहानी, नाटक और निबंध अपनी महत्वपूर्ण भूमिका रखते है वहीं कथेतर गद्यविधाओं में आत्मकथा भी साहित्य में अपना अमूल्य हस्तक्षेप रखती है। इनके द्वारा आत्मकथा लेखक अपनी जीवनानुभूतियों का साहित्यिक तथा कलात्मक अभिव्यक्ति देता है।

आत्मकथा का शाब्दिक अर्थ– स्वयं की कथा अर्थात् अपने निजी जीवन की कथा। यह दो शब्द 'आत्म' और 'कथा' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ आत्म–अपनी कथा–कहानी जो अपने जीवन की कहानी होती है। आत्मकथा की परिभाषा देते हुए त्रिलोकीनाथ शर्मा लिखते हैं कि "आत्मकथा आत्मकथाकार के द्वारा लिखित उसके निजी जीवन की अनुभूतियों एवं जीवन के विकासात्मक इतिहास की कलात्मक अभिव्यक्ति है, जिसमें जीवन सत्य और युग सत्य का समावेश रहता है।"[1]

इसी प्रकार आत्मकथा के संबंध में हरिवंशराय बच्चन का यह उदाहरण दृष्टव्य है "आत्मकथा लिखना बहुत कठिन काम है, क्योंकि जिसके बारे में आप लिखते हैं वे लोग जो अपनी शक्ल बनाये हुए हैं, अपने बारे में आप नहीं चाहते हैं और बिना दूसरों के बारे में कहें हुए, अपनी बारे में कह भी नहीं सकतें।"[2] इस तरह बच्चन जी जहां इसको कहना जितना सरल और सहज बताते है वहीं आत्मचित्रण का वर्णन और प्रस्तुतिकरण कठिन है। आत्मकथा ही लेखक के विगत जीवन के भोगे हुए यथार्थ का प्रस्तुतिकरण है।

विगत कुछ दशकों से हिन्दी साहित्य लेखन में दलित साहित्य अपनी अभिव्यक्ति के लिए संघर्षरत है। जिसकी सपाट और बैबाक अभिव्यक्ति सर्वप्रथम दलित आत्मकथाओं में देखने को मिलती है। दलित साहित्यकारों की आत्मकथाएं सबसे ताकतवर विधा है, जिसमें उनकी भोगी हुई पीड़ा और स्वयं की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति मुखरित हुई है। यह एक ऐसी विधा है जिसमें लेखक का व्यक्तित्व जितना उभरता है शायद ही किसी और विधा में देखने को मिलता हो।

दलित साहित्य सर्वप्रथम मराठी में देखने को मिलता है। मराठी के प्रभावस्वरूप ही यह हिन्दी पट्टी में आया। दलित मराठी साहित्यकार जिनमें दया पंवार की 'अछूत', लक्ष्मण गायकवाड़ की 'उठाईगीर', बेबी कांबले की 'हमारा जीवन', किशोर शांति बाई की 'छोरा कोल्हाटीका', शरण कुमार लिबांले की 'अक्करमाशी', वही हिन्दी दलित आत्मकथाओं में भगवानदास की 'मैं भंगी हूं', मोहनदास नैमिसराय की 'अपने–अपने पिंजरे'(दो भाग), ओमप्रकाश वाल्मिकी की 'जूठन'(दो भाग), डी. आर. जाटव की 'मेरा सफर मेरी मंजिल', सूरजपाल चौहान की 'तिरस्कृत', 'संतप्त', श्यामलाल की 'एक भंगी कुलपति की अनकही कहानी', श्यौराजसिंह बेचैन की 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर', रूपनारायण सोनकर की 'नागफनी', सुशीला टाकभौरे की 'शिकंजे का दर्द', कौशल्या बैसंती की 'दोहरा अभिशाप', तुलसीराम की 'मुर्दहिया', 'मणिकर्णिका', मार्टिन मेकवान की 'मेरी कथा' इन सभी आत्मकथाकारों ने अपनी आत्मकथाओं के माध्यम से अपने वर्ग,

*सहायक आचार्य – हिन्दी विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

GOVT. OF INDIA RNI NO. UPBIL/2015/62096

ISSN 2229-3620

UGC Approved
Care Listed Journal

SHODH SANCHAR Bulletin

PUBLISHED BY

sanchar
Educational & Research Foundation

Chief Editorial Office

448/119/76, Kalyanpuri, Thakurganj Chowk,
Lucknow, Uttar Pradesh - 226003
+91-94155 78129 | +91-79051 90645
serfoundation123@gmail.com | seresearchfoundation.in

Certificate of Publication

Ref. No.: **SSB/2021/KIS44**

Date: **27-03-2021**

Authored by

डॉ0 प्रवीण चन्द
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,जोधपुर।

for the Research Paper titled as

राधास्वामी पंथ : स्वरूप और दर्शन

Published in

Shodh Sanchar Bulletin, Volume 11, Issue 41, January to March 2021

SHODH SANCHAR BULLETIN * DR. VINAY KUMAR SHARMA * EDITOR IN CHIEF

Dr. Vinay Kumar Sharma
Editor in Chief
M.A., Ph. D., D.Litt. – Gold Medalist
Awarded by The President of India 'Rajbhasha Gaurav Samman'

ISSN - 2229-3620
UGC CARE LISTED JOURNAL
KIS
शोध संचार बुलेटिन
January-March, 2021
Vol. 11, Issue 41
Page Nos. 192-194
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

राधास्वामी पंथ : स्वरूप और दर्शन

डॉ0 प्रवीण चन्द*

शोध सारांश

संत साहित्य में लोक–जीवन की मौलिक दृष्टि होती है, उसमें अध्यात्म की अवर्णनीय अनुभूति है, उसमें जीवन की सजग छटपटाहट है। वह मानवीयता की अगाध गहराई और ईश्वर की अपार उच्चता को एक साथ लेकर चलता है। निर्गुण संत साहित्य सामान्य जनमानस को मानवता का संदेश प्रेषित कर सांसारिक मायाजाल से मुक्ति की ओर अग्रसर करता है। संत मनुष्य को गुरु द्वारा प्रदत्त नामस्मरण कर नैतिक मार्ग का अनुसरण करने पर बल देता है। संत साहित्य में राधास्वामी पंथ का अपना अहम स्थान है। राधास्वामी पंथ समस्त निर्गुण संतो के विचारों को अपनाकर लोगों को संदेश देता है। प्रस्तुत शोध पत्र में राधास्वामी पंथ के स्वरूप और दर्शन का विवेचन किया गया है।

Keywords : संत, निर्गुण–निराकार, मानवता, पंथ, दर्शन, आत्मा–परमात्मा, साधना, उपदेश आदि।

वर्तमान भौतिकतावादी युग में मनुष्य की 'मैं' की भावना जिस रूप में बढ़ती जा रही है, उसी संदर्भ में निर्गुण संत साहित्य इससे ऊपर उठकर मानव कल्याण तथा मानवता का संदेश देता है। संतों द्वारा निर्गुण निराकार, निर्विकार ब्रह्म की उपासना के संबंध में डॉ. शशिकला पाण्डेय लिखती हैं कि "संतो द्वारा ज्ञान, भक्ति, कर्म और योग के साधना–मार्गों के प्रति समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं। गुरु को अपने आराध्य से भी अधिक महत्व देते है, कर्मनिष्ठता और आचरण शुद्धि के वे हिमायती हैं, वे आत्मविश्वास और आत्मश्लाघा से भरे हुए है।"[1] इसी परिप्रेक्ष्य में आज राधास्वामी पंथ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। राधास्वामी पंथ की स्थापना स्वामी शिवदयाल सिंह जी द्वारा की गयी और आज यह पंथ अपनी अनेक शाखाओं के माध्यम से मानव जाति में ज्ञान, मनुष्यता, समानता, सहृदयता, कृपालुता आदि गुणों एवं भावनाओं का संदेश प्रसारित कर रहा है।

राधास्वामी पंथ एक नया सिद्धान्त या दर्शन नहीं है बल्कि यह समस्त पूर्ण संतों के उपदेशों और शिक्षा का सार है, जिसमें कबीर, गुरुनानक, रैदास, मीरा, तुलसी आदि समस्त संतो के विचारों का समावेश है। इस संदर्भ में 'उपदेश राधास्वामी' पुस्तक के संतमत सार में लिखा हुआ है कि "राधास्वामी मत कोई अलग धार्मिक फिरका या सम्प्रदाय नहीं है, न ही यह कोई सामाजिक, जातीय या राजनीतिक संगठन है। इसका संबंध किसी एक धर्म से नहीं, बल्कि प्रत्येक धर्म के लोग इससे एक जैसा लाभ प्राप्त कर सकते है।"[2] इस तरह से इसमें किसी देश या धर्म में हुए संतों को छोटा या बड़ा सिद्ध करने का प्रयत्न नहीं किया जाता और न ही किसी संत की वाणी को कम सम्मान दिया जाता है। इसमें सभी देशों, जातियों और किसी भी समय में हुए संतों के उपदेशों को समान आदर देते हुए मनुष्य को लाभ उठाने की प्रेरणा ही दी जाती है।

राधास्वामी पंथ संतों के सिद्धान्तों पर ही विद्यमान है और इनका मानना है कि परमात्मा से बिछुड़ी आत्मा परमात्मा से मिलकर ही सच्चा आनन्द प्राप्त कर सकती है और यह आनन्द बाहरी कर्मकाण्ड़ों, आडम्बरों, पूजा–पाठ, छापा–तिलक आदि से प्राप्त नहीं होता बल्कि यह तो मनुष्य के स्वयं के अन्दर ही विद्यमान है। यह आत्मा और परमात्मा उसी में ही विराजमान है और इसको केवल संतों के ज्ञान, उपदेश और मार्गदर्शन के द्वारा ही जाना जा सकता है। इस संबंध में राधास्वामी पंथ के प्रर्वतक स्वामी शिवदयाल सिंह का यह उदाहरण दृष्टव्य है–

"देखो चरित्र काल करता के। कोई सिर कोई पैर रूंधान।।

भटक–भटक भटकाया सब जग। कोई न लगाया ठौर ठिकान।।

ऐसी हालत देख जगत की। संत सतगुरु प्रगटे आन।।

गुरु सेवा और नाम महातम। सतसंग सतगुरु किया बखान।।

*सहायक आचार्य – हिन्दी विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 56/3 अक्टूबर-दिसंबर 2021 300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय

हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 0124-4076565, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ० मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर क्षेम
प्रमोद सागर

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार
डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क

आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : छह हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

नारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर (राज.)

समकालीन हिंदी आदिवासी नाटकों में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन/ **राखी क्लेमेंट** 236
त्रिपुरा में जनजागरण का जीवंत दस्तावेज :
हाचुक खुरिवो (पहाड़ों की गोद में) उपन्यास/ **मिलन रानी जमातिया** 242
वाजसनेयि-संहिता में पदक्रम/ **डॉ॰ निशा गोयल** 247
संत दादूदयाल का 'ब्रह्म' विषयक चिंतन/ **सुनील कुमार छीपा** 251
डॉ॰ महेश 'दिवाकर' के मुक्तक काव्य में हिंदीभाषा प्रेम/
पूनम, डॉ॰ संजीव कुमार 258
हिंदी जाति के संदर्भ में रामविलास शर्मा की स्थापनाएँ/ **अब्दुल हफीज** 265
कबीर-संबंधी अध्ययन में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी का योगदान/ **डॉ॰ श्रद्धा शुक्ल** 270
अधूरे व्यक्तियों की पूर्ण अभिव्यक्ति : आधे-अधूरे/ **डॉ॰ सुनीता** 275
हलाला : स्त्रियों की अस्मिता पर प्रश्नचिह्न लगाती प्रथाएँ/ **पूजा** 281
यशपाल के उपन्यास और मार्क्सवाद/ **रीना** 284
शैलेंद्र सागर की कहानियों में स्त्री-अस्मिता का स्वरूप/
रविता देवी, डॉ॰ रामविनय शर्मा 290
पृथ्वीराज रासो में वर्णित नारी पात्र : एक विश्लेषण/ **डॉ॰ प्रवीणचंद** 295
केदारनाथ अग्रवाल की सौंदर्य-दृष्टि/ **डॉ॰ चंद्रकांत सिंह** 301
विस्थापन त्रासदी उर्फ कुलभूषण/ **डॉ॰ अनिता** 307
मंजूर एहतेशाम के कथा-साहित्य में अंतरधर्म विवाह/
रविना कादियान, डॉ॰ संजीव कुमार 312
आदर्श की संकल्पना पर अमृत-साहित्य/ **डॉ॰ हेमलता शर्मा** 316
अस्तित्व संघर्ष से जूझता किसान (तेरा संगी कोई नहीं)/ **गंगा कोइरी** 322
पर्यावरण संरक्षण एक विश्लेषणात्मक अध्ययन/ **डॉ॰ पूनम रौतेला, गौरव** 328
लेडीज क्लब : वर्तमान समय की बेबाक तस्वीर/ **मंजु माली, डॉ॰ मृदुल जोशी** 333
17वीं शताब्दी में आए प्रमुख विदेशी यात्रियों की दृष्टि में भारत/ **देवकुमार** 337

What The Dharmashastra Has To Say About Dowry/ **Jyoti god** 344
Sarojini Naidu's Poetry : A Gateway to Indian Tradition and Folk -life/
Dr. Anupam Soni 348
Impact of Healthcare Services in the Economic Development
of people of Bihar/ **Dr. Ratan Kumar** 353
Opportunities and Challenges of Digital Publication in Modern Era/
Kamal Kant 359
A Comparative Study of Conceptual Metaphors of Love in
Hindi and Indonesian Love Metaphors/ **Dr. Neelam Yadav** 366
The Sikh Educational Conferences (1908-1915) Isues and Critique as
discussed in Presidential Addresses/ **Tejinder Singh** 377

ISSN 0975-735X

आचार्य एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर (राज.)

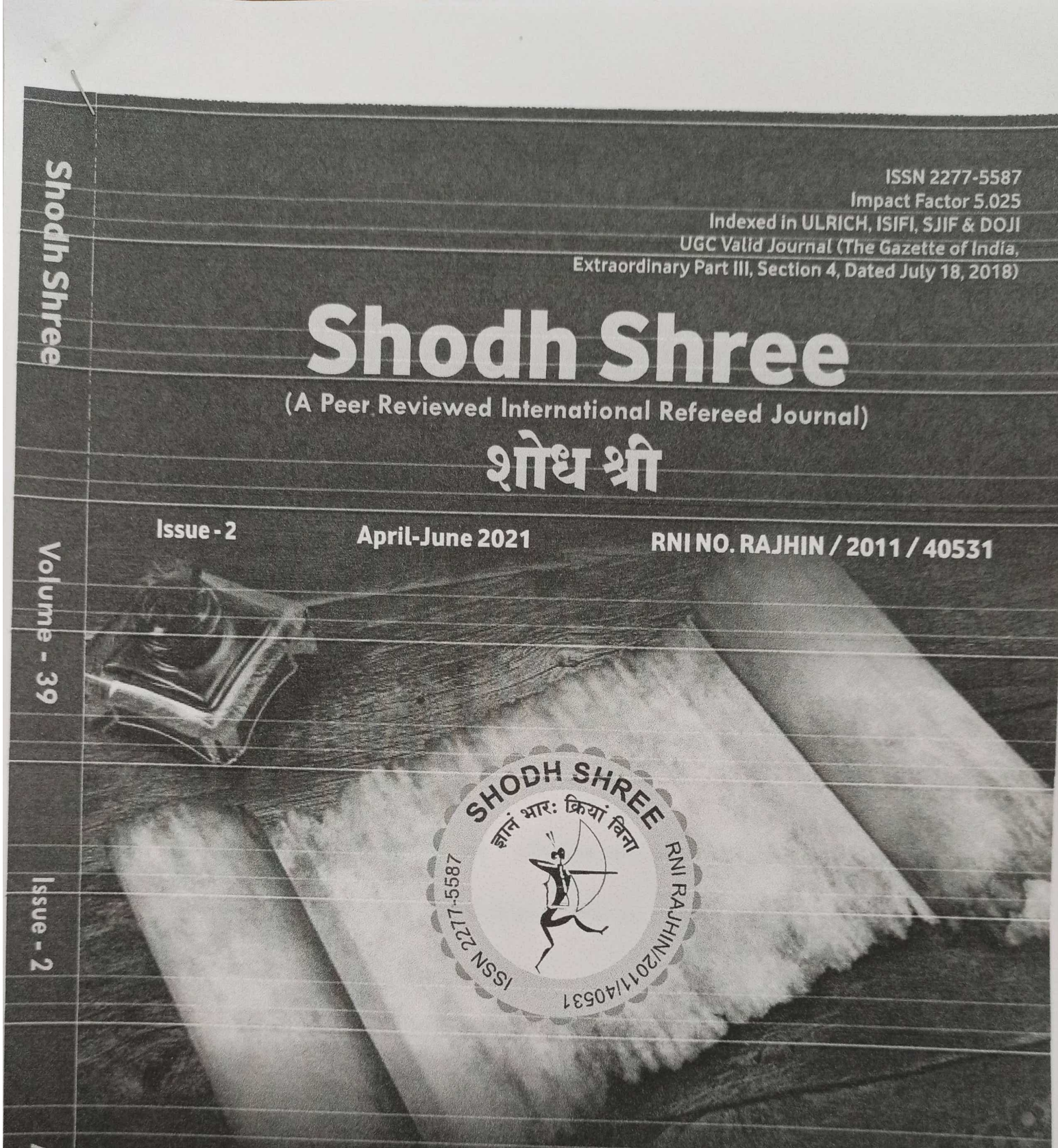
ISSN 2277-5587
Impact Factor 5.025
Indexed in ULRICH, ISIFI, SJIF & DOJI
UGC Valid Journal (The Gazette of India,
Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Shodh Shree

(A Peer Reviewed International Refereed Journal)

शोध श्री

Issue - 2 April-June 2021 RNI NO. RAJHIN / 2011 / 40531



CHIEF EDITOR
Virendra Sharma

EDITOR
Dr. Ravindra Tailor

shodhshree@gmail.com
www.shodhshree.com

Shodh Shree Volume - 39 Issue - 2 April - June 2021

Shodh Shree

(A Peer Reviewed International Refereed Journal)

Contents

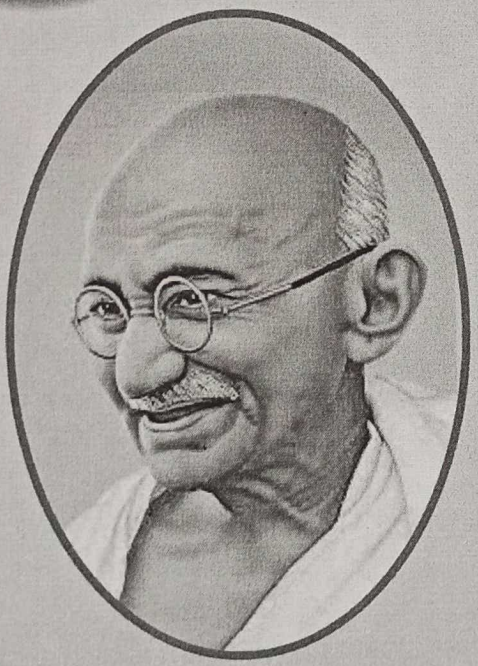
Volume-39 **Issue-2** **April-June 2021**

1. **राजस्थान में आर्थिक परिवर्तन और आदिवासी एवं किसान आंदोलन (1920–1939)** 1–6
   डॉ. सज्जन पोसवाल, झालावाड़
2. **अवध में खाद्य तथा पेय पदार्थ (1722–1856 ई.)** 7–12
   डॉ. चित्रगुप्त, झांसी (उत्तरप्रदेश)
3. **नई शिक्षा नीति 2020: विंहगम परिदृश्य** 13–19
   डॉ. शालिनी चतुर्वेदी, जयपुर
4. **जनपद चमोली में लोक संस्कृति और पर्यटन का वर्तमान समाज तथा अर्थव्यवस्था पर प्रभाव** 20–26
   डॉ. हर्षी खण्डूडी, चमोली (उत्तराखण्ड)
5. **19 वीं शताब्दी में पश्चिमी राजस्थान के प्रमुख खनिज : एक अध्ययन** 27–30
   डॉ. अनिल पुरोहित, जोधपुर
6. **आजादी के बाद राजस्थान में भूमि सुधार के सरकारी प्रयास (1947 ई. से 1970 ई. तक)** 31–38
   निर्मल शर्मा, जयपुर
7. **नरेंद्र कोहलीः व्यक्तित्व और कृतिव** 39–42
   दीक्षा गुप्ता, कलकत्ता (पश्चिम बंगाल)
8. **सिक्खों के बीकानेर राज्य के साथ सम्बन्ध : ऐतिहासिक अध्ययन (20वीं शताब्दी में)** 43–52
   डॉ. रश्मि मीना, जोधपुर
9. **पातोला महादेवः भौगोलिक पर्यटन और भौगोलिक सर्वेक्षण का महत्त्वपूर्ण केन्द्र** 53–56
   अभिषेक श्रीवास्तव, भीलवाड़ा
10. **हिन्दी उपन्यास साहित्य में स्त्री लेखन की परम्परा** 57–61
    डॉ. प्रवीण चन्द, जोधपुर
11. **मध्यकालीन मारवाड़ में पुरुष एवं स्त्री आभूषण** 62–65
    गरिमा, जोधपुर
12. **मुंहणोत नैणसी और उनके ऐतिहासिक ग्रंथ : एक अध्ययन** 66–69
    डॉ. मीनाक्षी बोराणा, जोधपुर
13. **महात्मा गांधी की पत्रकारिता** 70–77
    हर्षवर्धन पाण्डे, नैनीताल (उत्तराखण्ड)
14. **मारवाड़ के राठौड़ों के प्रारंभिक राजनीतिक इतिहास का विश्लेषणात्मक अध्ययन** 78–80
    डॉ. भगवान सिंह शेखावत, जोधपुर
15. **पारंपरिक लोक रंगकला के समकालीन स्वरूप का स्त्रीपक्षीय परिपार्श्व : पंडवानी के विशेष संदर्भ में** 81–84
    डॉ. अपर्णा वेणु, ओड्डाप्पालम (केरल)
16. **जोधपुर का प्राचीन जल स्त्रोत–शेखावत जी का तालाब** 85–87
    डॉ. प्रतिभा सांखला, जोधपुर

ISSN : 2249-930X
पीयर रिव्यूड व यू.जी.सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल

हिंदी अनुशीलन

हिंदी अनुशीलन



प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो. नरेन्द्र मिश्र

वर्ष - 62 | अप्रैल-जून तथा जुलाई-सितम्बर 2020 | अंक : 2-3

हिंदी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

वर्ष 62 अप्रैल-जून तथा जुलाई-सितम्बर 2020 अंक 2-3 ISSN : 2249-930X

परामर्शदाता
प्रो. कमल किशोर गोयनका
प्रो. सुरेन्द्र दुबे
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रधान संपादक
प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो. नरेन्द्र मिश्र

संपादन सहयोग
डॉ. निर्मला अग्रवाल
प्रो. मीरा दीक्षित

भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग

29. मैथिलीशरणगुप्त के काव्य में गांधी चिन्तन 199
डॉ. प्रणु शुक्ला
30. भारतीय साहित्य में गांधी का प्रदेय 203
डॉ. कमला चौधरी
31. शान्तिदूत महात्मा गांधी और टॉलस्टॉय 212
डॉ. राहुल पाण्डेय
32. गाँधीवादी दर्शन और प्रेमचंद का कथा साहित्य 218
डॉ. प्रेमसिंह
33. महात्मा गाँधी के आदर्शों का कहानी और नाटक विधा पर प्रभाव 223
डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव
34. लोक गीतों में गाँधी 228
डॉ. महीपाल सिंह राठौड़
35. निर्भीक पत्रकारिता के महामानव गांधीजी 239
डॉ. शशिकांत मिश्र
36. मोहन से महात्मा तक 246
जितेन्द्र कुमार यादव
37. वर्तमान भारतीय परिदृश्य एवं गांधी जी के विचार 251
डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल'
38. कुबरेनाथ राय की दृष्टि में गाँधी 260
डॉ. राजेश कुमार
39. हिंदी प्रचार में महात्मा गाँधी का अवदान 267
नवनीत आचार्य
40. गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित प्रमुख हिन्दी उपन्यासकार 273
डॉ. महात्मा पाण्डेय
41. समकालीन कविता में अभिव्यक्त भारतीय सभ्यता एवं गांधी दर्शन 278
डॉ. बृजेश कुमार पाण्डेय
42. महात्मा गांधी के जीवन-संघर्ष का जीवन्त दस्तावेज-पहला गिरमिटिया 291
डॉ. आनन्द प्रकाश गुप्ता
43. सियाराम शरण गुप्त के काव्य में गांधीदर्शन 296
डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी

डाक-पंजीयन म.प्र./भोपाल/4-472/2018-20
पोस्टिंग दिनांक : प्रतिमाह दिनांक 2 से 3, पृष्ठ सं. 112
प्रकाशन दिनांक : 1 से 1 प्रतिमाह

आर.एन.आई क्र. : 38470/83
आई.एस.एस.एन. क्र. : 2456-7167

मूल्य 25/-

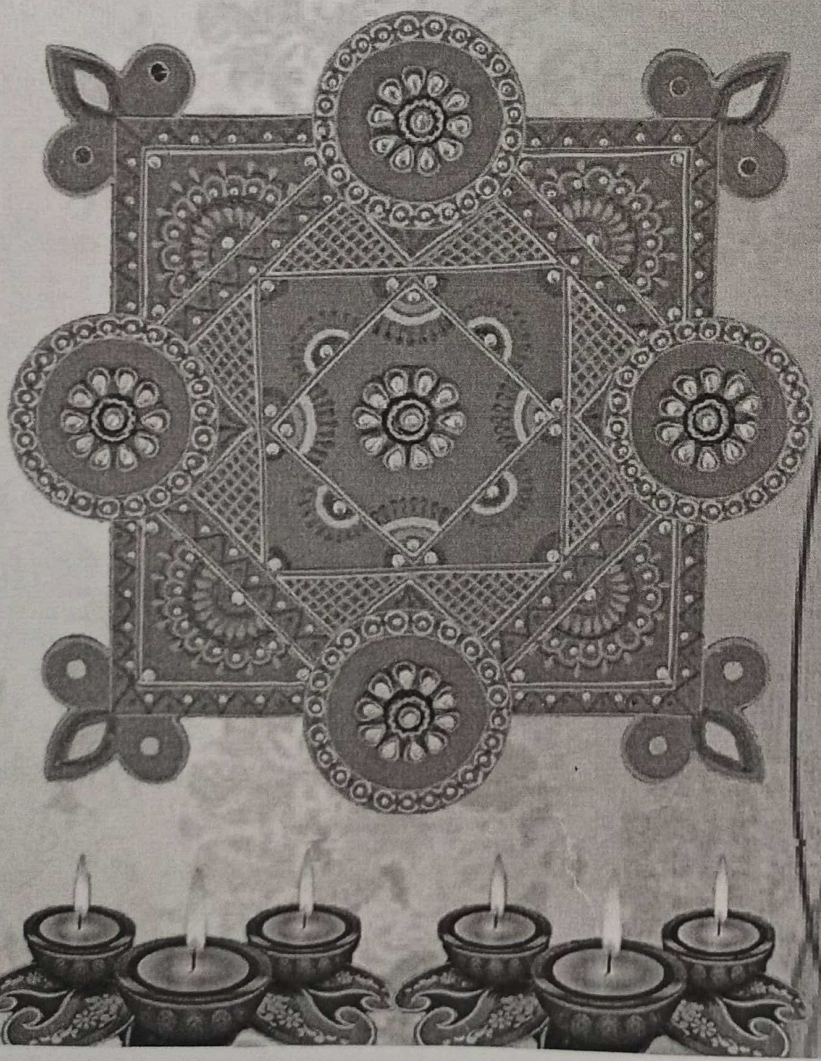
39 वाँ वर्ष

अक्षरा

नवम्बर 2020

188

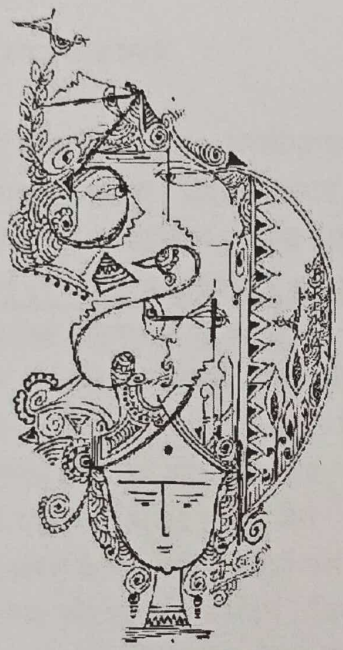
साहित्य की मासिकी



अक्षरा
अंक-188
मूल्य 25/- रुपये

अक्षर

188



कैलाशचन्द्र पन्त
प्रधान सम्पादक

सुशील कुमार केडिया
प्रबंध सम्पादक

डॉ. सुनीता खत्री
सम्पादक

श्रीमती-जया केतकी
सम्पादन सहयोग

सुधा बाथम
अक्षर-संयोजन

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 300 रुपए
दस वर्षीय सदस्यता शुल्क : 3000 रुपए
एक प्रति 25 रुपये
विदेशों के लिए : एक अंक : 5 डॉलर, वार्षिक : 60 डॉलर
चेक या ड्राफ्ट 'म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति- 'अक्षरा' के नाम देय
ऑनलाइन पेमेंट के लिये- इंडियन बैंक, हिन्दी भवन शाखा, भोपाल
Ac/ No. 50413818696, IFSC- ALLA 0212241

सम्पर्क : म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल - 462002 (म.प्र.)
दूरभाष : 0755- 2660909, 2661087, ई-मेल - myakshara18@gmail.com
hindibhawan.2009@rediffmail.com
वेबसाइट - www.akshara.page, www.madhyapradeshrashtrabhasha.com



उद्भावना

अंक 188 नवंबर 2020

सम्पादकीय

सबद निरंतर

अदला-बदली : **रमेशचन्द्र शाह** 7

आलेख

कृष्ण बिहारी मिश्र के दो ललित निबंध : **अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी** 10

छायावादी काव्य में मातृभूमि वंदना : **सदानन्दप्रसाद गुप्त** 15

वर्तमान चुनौतियाँ और आज का साहित्य : **रंजना अरगड़े** 21

सनातन गाँधी 'महात्मा इन मेकिंग' पर पुनर्विचार : **अम्बिकादत्त शर्मा** (गतांक से आगे) 26

जनमाध्यमों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से सृजित मूल्य : **कुमुद शर्मा** 32

दिनमान के सम्पादक और उनका योगदान : **मनीषचंद्र शुक्ल** 37

विष्णु नागर की कहानी : शैली मेरी बाकी उसका : **सरिता कुमारी** 40

रामचरितमानस में वर्णित राम राज्य की प्रासगिकता : **बिजेन्द्र कुमार** 43

हिंदी गद्य साहित्य में राष्ट्रीयता : **सुरेन्द्र कुमार जैन** 49

आधुनिक असमिया कहानियों के नारी पात्रों में विद्रोही स्वर : **कुल प्रसाद उपाध्याय** 52

समकालीन हिंदी सिनेमा और सामाजिक संदर्भ : **विजय कुमार मिश्र** 57

लोकविधा और गुमनाम कलाकारों का दस्तावेज : सुर बंजारन : **नेहा गुप्ता** 61

जाम्भाणी साहित्य में पर्यावरणीय चिंतन : संत वील्होजी : **प्रेम सिंह** 66

ललित निबन्ध

एक दीया होता है : **सुमन चौरे** 70

कहानी

खुलती गाँठे : **आर. एस. खरे** 75

अपनी-अपनी संतुष्टि : **श्याम नारायण श्रीवास्तव** 79

लघुकथा

मार्गदर्शन : **सीमा वर्मा** 83

स्वयंसिद्धा : **नम्रता सरन सोना** 85



Scanned with CamScanner

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

कविता प्रसंग

Scanned with CamScanner

अव्यावसायिक
अंक 44, वर्ष 13

बनास जन
जून 2021

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह
डॉ. ममता कालिया
डॉ. के. सी. शर्मा
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
प्रो. माधव हाड़ा

संपादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला-पक्ष : निकिता त्रिपाठी, प्रयागराज

सहयोग राशि : 150 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–175 रुपये
300 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–325 रुपये
5000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
8000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)
The Draft/Cheque may please be made in favour of 'Banaas Jan'
OurA /C Details : SBI C/A No.61159024776
IFSC Code : SBIN0032036
Branch name : State Bank of India, D L DA V Model School, BN Block
Shalimar Bagh, New Delhi-110088

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सअप : +91–8130072004 (केवल संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
A Collection of Literature
Language : Hindi

ISSN 2231–6558

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

अपनी बात		4
पहली बार : कविताएँ		
गौरव सिंह		5
ज्योति तिवारी		14
विरासत		
मेघदूत को फिर से पढ़ते हुए	अवधेश प्रधान	25
प्रति-आख्यान (काउंटर नेरेटिव) की अवधारणा और मरु-गुर्जर प्रेमाख्यान जेठवा-ऊजळी	प्रेम सिंह	34
पूर्व कथा संपेख	माधव हाड़ा	43
परिदृश्य		
समकालीन कविता और लीलाधर जगूड़ी	रविशंकर सोनकर	59
कठिन दिनों के कवि बार-बार लौटकर आते हैं	शिरीष मौर्य	65
पहाड़ों की यातनाएँ हमारे पीछे हैं....	ए अरविंदाक्षन	70
ज्ञानेंद्रपति की कविता : प्रकृति परंपरा और आधुनिकताबोध	रविरंजन	78
अरुण कमल : नये इलाके का प्रतिबद्ध प्रहरी	नीरज	87
स्त्री कविता का 'पोलिटिकल' और कात्यायनी की कविता	रेखा सेठी	96
आदिम कस्तूरी की सुगन्ध : अनिल मिश्र का कवि कर्म	जितेन्द्र श्रीवास्तव	108
स्मृतियों से निर्मित जितेन्द्र श्रीवास्तव का काव्य-वैभव	अरुण कुमार पाण्डेय	114
पुनःपाठ		
उपभोक्ता संस्कृति के अँधेरे में समरसता का आकाशदीप	रामेश्वर राय	119
कामायनी : आलोचकों की दृष्टि में	रेणु बाला	126
अंधकार और प्रकाश के सम्मिलन का प्रारम्भिक बिन्दुः नीहार	वर्षा अग्रवाल	136
रश्मिरथी की लोकप्रियता का समाजशास्त्र	रविरंजन	145
दबी हुई दूब का रूपक	गजेंद्र पाठक	155
मैं अब घर जाना चाहता हूँ	आशीष त्रिपाठी	167
एक कविता : एक पाठ		
निराला की कविता का तेवर	गोपाल प्रधान	177
नन्ही परी के लिए स्वागत गान	सदाशिव श्रोत्रिय	180
मुझे देवीप्रसाद मिश्र की कविता के पास उतार देना	प्रभात	184
कुछ नये संग्रह		
आँसू का वजन	मानवेन्द्र सिंह	186
अफसोस दर्पण	प्रियदर्शी ठाकुर 'ख़याल'	191
तनी हुई रस्सी पर	हरीश करमचंदाणी	196
समीक्षा		
कविताओं के बीच उपस्थित कवि	राहुल शर्मा	201

Scanned with CamScanner

आदिवासी कहानी साहित्य
और
विमर्श

सम्पादक
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन

अनुज्ञा

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखकाधीन

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN 978-93-89341-20-1

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anuugyabooks.com

मूल्य : 750.00 रुपये

आवरण

मीना-किशन सिंह

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

AADIVASI KAHANI SAHITYA AUR VIMARSH

***Aadivasi Discourse** edited by* **Dr. Khanna Prasad Amin**

सम्पादकीय

आदिवासी लेखन विविधताओं से भरा हुआ जीवनवादी साहित्य है। मूल निवासियों के सर्वांगीण विकास का सवाल लेकर यह साहित्य स्थापित वर्णवादी समाज-व्यवस्था को चुनौती दे रहा है। साथ ही यह मूलनिवासियों की सामाजिक संरचना का विचार भी रखने लगा है। उसके कारण मौखिक साहित्य की समृद्ध परम्परा का लाभ आदिवासी और गैर-आदिवासी रचनाकारों को मिला। अन्य साहित्य की तरह आदिवासी साहित्य की कोई केन्द्रीय विधा नहीं है। फिर भी कविता, उपन्यास, नाटक और कहानी– इन सभी विधाओं में रचनाकारों ने अपनी बात प्रस्तुत करने की कोशिश की है। वैसे तो आदिवासी रचनाकारों ने कविता को अपना प्रमुख हथियार बनाया है। लेकिन समकालीन हिन्दी कहानी के क्षेत्र में एलिस एक्का, राम दयाल मुंडा, पीटर पॉल एक्का, वाल्टर भेंगरा, वन्दना टेटे, मंगल सिंह मुंडा, विजय सिंह मीणा, शंकरलाल मीणा, हरिराम मीणा, रमेश चन्द मीणा, रोज केरकेट्टा, विपिन बिहारी, मंजु जोत्सना, रत्न कुमार सौंभरिया, रणेन्द्र, राम कुमार तिवारी, महेरुन्निसा परवेज, संजीव आदि ने अपनी कलम चलाई है। इन रचनाकारों ने कहानियों के माध्यम से आदिवासी जीवन की विभिन्न समस्याओं एवं जल, जंगल और जमीन से जुड़ी अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। इनकी प्रमुख समस्या विस्थापन की है। आदिवासी समाज का मूलाधार जल, जंगल और जमीन है। इनका उजड़ना उनके समाज, संस्कृति और जातीय अस्मिता का उजड़ना है।

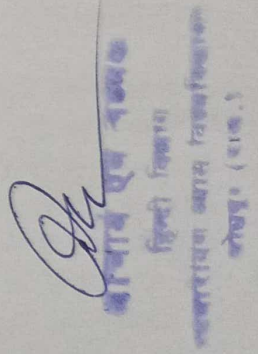
भूमंडलीकरण के कारण आदिवासियों की स्थिति दर्दनाक बन गई है। उनको सभी जगहों से बेदखल कर अपमानित किया जा रहा है। जिन आदिवासियों ने जंगल-झाड़ काटकर जंगली जानवरों से लड़कर खेत-खलिहान बनाए और उन्हें वहाँ से खदेड़ा जाएगा तो कैसा महसूस होगा? इस विषय में वह बहुत कुछ कहना चाहता है लेकिन शब्दों की कलाबाजीगरी वह नहीं जानता। इसलिए उन्हें उत्पीड़न और शोषण से गुजरना पड़ रहा है। वह बेसहाय, बेबस और लाचार नजर आता है। क्योंकि उनके साथ आए दिन अन्याय ही किया जा रहा है। उनको संविधान द्वारा प्रदत्त मूलभूत अधिकारों से वंचित रखा गया है। विकास के नाम पर उनका विनाश होता नजर आ रहा है। उनका विविध परियोजनाओं के नाम पर बहुत शोषण किया

14. हिन्दी में आदिवासी जीवन केन्द्रित कहानियों का संक्षिप्त विश्लेषण	*–डॉ. सुरेश कुमार वसावा*	141
15. हिन्दी आदिवासी कहानियाँ : संघर्ष, शोषण, विस्थापन एवं दर्द का दस्तावेज	*–डॉ. धीरज वणकर*	148
16. संमकालीन हिन्दी कहानी और आदिवासी जीवन-सन्त्रास	*–डॉ. कुलदीप सिंह मीणा*	156
17. प्रायश्चित का दंश	*–डॉ. अमिता*	162
18. मूल निवासियों के अपकर्ष (पतन) एवं हीनता-बोध की भाषिक कहानी के आधारभूत तत्त्व	*–डॉ. श्रवण कुमार मेघ*	165
19. बहू जुठाई : अपनी जमीन से जुड़ी कहानियाँ	*–डॉ. जशवंत एस. राठवा*	182
20. बस्तर की लोक-कथाओं में चित्रित सांस्कृतिक परिदृश्य	*–डॉ. विनीता रानी*	187
21. कुंकणा जाति और उसकी राम-कथा	*–डॉ. हेतल जी. चौहाण*	192
22. आदिवासी कहानी और समाज	*–डॉ. राखी के. शाह*	197
23. समसामयिक हिन्दी साहित्य चेतना का स्वर-आदिवासी चेतना	*–डॉ. के. सुवर्णा*	200
24. हिन्दी आदिवासी कहानी साहित्य– एक विवेचन	*–प्रा. आमलापुरे सूर्यकान्त विश्वनाथ*	207

विविध विमर्श

25. आदिवासी संस्कृति : दशा एवं दिशा	*–डॉ. जनक सिंह मीना*	215
26. वनंवासियों की वेदना का स्वर : 'आदिवासी की मौत'	*–बुद्धिनी कुमारी*	225
27. हिन्दी लेखन और आदिवासी साहित्य	*–डॉ. संजीव कुमार*	238
28. भूमंडलीकरण और आदिवासी अस्मिता	*–डॉ. खन्नाप्रसाद अ़मीन*	243
29. 'छाड़न' उपन्यास और आदिवासी समाज	*–डॉ. सुरेश कुमार निराला*	247
लेखकों का परिचय		251

कहानी साहित्य



अपने दर्द को कम करने की कोशिश करती, लेकिन किस्मत को वे भी मंजूर नहीं था। एक दिन अपनी ननद के साथ डोमना की पत्नी डोमना को बिना बताये सिनेमा देखने चली जाती है, जो डोमना को रास नहीं आता और नशे में धुत वह अपनी पत्नी को बुरे तरीके से पीटता है। डोमना के इस व्यवहार से आहत होकर उसकी पत्नी घर छोड़कर मायके चली जाती है और आत्महत्या कर लेती है। इस पूरे प्रकरण में बच्चा न होना उसके सबसे बड़े दोष के रूप में सामने आया।

पत्नी की मृत्यु के बाद डोमना पूरे तरीके से टूट गया था और वह पश्चाताप की आग में जलने लगा था। एक दिन डोमना एक गर्भवती और बेहद बद्सूरत-सी महिला को घर लेकर आ जाता है। इस महिला को डोमना ने दूसरे के बच्चे के साथ अपनाया था, क्योंकि वह अपनी पत्नी के मौत का जिम्मेदार तो अपने-आपको समझता ही है, साथ ही उसकी बाप बनने की लालसा भी पूरी हो जाती है और एक बेसहारा, लाचार महिला को सहारा मिल जाता है। यह औरत दारू बेचती थी और उसके ही किसी ग्राहक ने अपना बच्चा उसके कोख में छोड़ दिया था, जिसे अपनाकर डोमना ने मानवीय संवेदना के साथ-साथ आदिवासी पुरुष की संवेदना को भी व्यक्त किया था, जो मुख्यधारा के पुरुषों द्वारा शायद ही कभी किया जा सकता है।

अतः हम यह देखते हैं कि यह कहानी बेहद ही मार्मिक है, जिसमें एक ओर आदिवासी लोक-कला और आदिवासी महिलाओं की निपुणता और हिम्मत को दिखाया गया है, तो वहीं दूसरी ओर एक आदिवासी महिला की बेचारगी को भी प्रस्तुत किया गया है और औरत को बच्चा पैदा न होने को सामाजिक अभिशाप के रूप में भी यहाँ दिखाया गया है, जिसके लिए उसे तरह-तरह की यातनाओं से गुजरना पड़ता है। साथ ही डोमना के रूप में एक बेहद संवेदनशील पुरुष के चित्र को भी चित्रित किया गया है। यह कहानी तथाकथित सभ्य समाज के लिए किसी प्रेरणा से कम नहीं है।

मूल निवासियों के अपकर्ष (पतन) एवं हीनता-बोध की भाषिक कहानी के आधारभूत तत्त्व

डॉ. श्रवण कुमार मेघ

प्राचीन भारतीय इतिहास की कहानी इतनी ही पुरानी है जितनी कल्पना, मिथक। यह आख्यानों की यूनानी उद्धरणों की कहानी है। जिसे हम शक कहते हैं। वह 'सूरी' गोत्र 'रूसी' का विपर्यय है। शाशक > शासक, मालिक, ईश्वर रूसी का व्युत्कर्म है। इनका आदेश ही कानून है वह राजाज्ञा ही ईश्वर की आज्ञा है। राज शब्द जार का विपर्यय है। जो रूस देश में जार का विपर्यय राज या राजा के अर्थ का वाचक है। राष्ट्रीय शक संवत् भी यूनान की पहचान 'यवन' जाति A one श्रेष्ठ जाति का वाचक है।

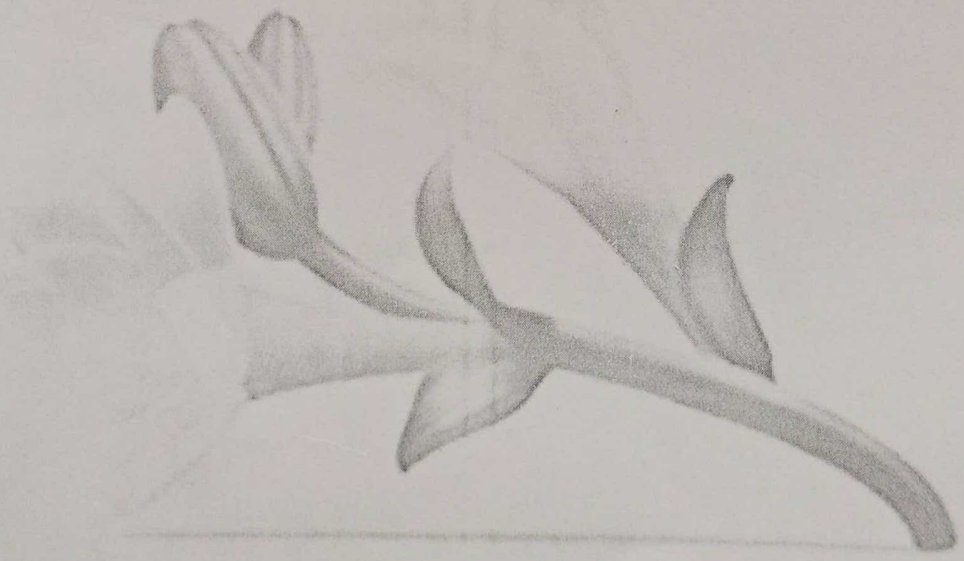
रूस के 'एपिरूस राज्य के एलेक्जेण्डर'[1] को यवन कहा जाता है। उसकी भोग वृत्ति को 'एलेक् नी रंजन' की भोगवृत्ति को निषिद्ध करने के लिए गोपाल कृष्ण ने विरोध किया था। इस सात समुद्र शाक द्विपीय रूस यूरोप रूस की कहानी जार या राजा या सामन्त की कहानी है।

भारत में ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद एवं चिकित्सा पद्धतियों का यवनीकरण के स्थान पर भारतीयकरण किया गया। भारत की भाषा इण्डो यूरोपियन है तथा ऋक् वेद का पहला देवता शक-इन्द्र > सकिन्द्र > सिकन्द्र > सिकन्दर ही शक्र और इन्द्र है। इण्ड या इन्द्र यूरोपियन गौरांग देवता है। यही शक विदेशी आर्य जाति भारतीय राष्ट्रीय संवत की स्थापना करती है। शक जाति के आगमन से लेकर अँग्रेजों से पूर्व तक शक सिक्के ही विद्यमान हैं। यूनानी शासक, ज्योतिर्विद, खगोलविद, भूगोलवेत्ता, इतिहास के जनक, आयुर्वेद एवं चिकित्सा-पद्धति का यूनानी होते हुए शरणार्थी भरतिया नाटक मण्डली ने इसका भारतीयकरण कर दिया। वृहत् संहिता में वृह शब्द यव या जव शब्दवाचक है। यवन या जवन में न का लोप कर दिया, यवन जर्मन का ही संक्षेपण है। ऋग्वेद में भारतीय देवता अश्विनी कुमारों को नात्स्य या नाजी सर्वत्र लिखा है। जो रूस-जर्मन जाति का बोध कराते हैं। भारतीय स्वास्तिक 卐 नाजि चिह्न ही विपर्यय 卐 बना कर मांगलिक बनाया गया है। रूसी त्रिशूल को स्तायिक Ψ चिह्न से अभिहित किया जाता है। रूस में यामल द्वीप भारत में 'शिव

ISSN : 2249-930X
(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

हिंदी अनुशीलन

त्रैमासिक



प्रधान संपादक
प्रो0 नंदकिशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो0 नरेन्द्र मिश्र

वर्ष 62 दिसम्बर 2020 अंक 4

हिंदी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

वर्ष 62 | दिसम्बर 2020 | अंक 4 | ISSN : 2249-930X

परामर्शदाता
प्रो. कमल किशोर गोयनका
प्रो. सुरेन्द्र दुबे
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो. नरेन्द्र मिश्र

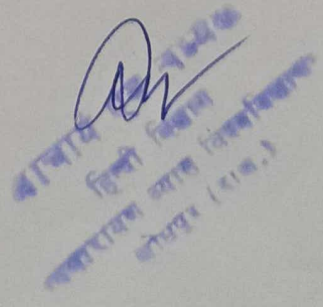
संपादन सहयोग
डॉ. निर्मला अग्रवाल
प्रो. मीरा दीक्षित

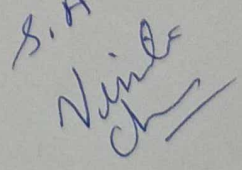
भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग

अनुक्रम

1.	विमर्श *प्रोफेसर नन्द किशोर पाण्डेय*	7
2.	संवाद *प्रोफेसर नरेन्द्र मिश्र*	11
3.	निराला का अद्वैत दर्शन *प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित*	23
4.	रीतिकाल के रामपरक प्रबंध काव्य *प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल*	28
5.	आधुनिक जनमाध्यमों की प्रकृति और भाषा में नवाचार : ई-लेखन *डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह*	37
6.	द्रौपदी का लोकमंगलकारी चरित्र और भारतीय दृष्टि *डॉ. श्रीमती वंदना कुमारी*	44
7.	आधुनिक हिन्दी कवयित्रियों की राष्ट्रीय काव्यधारा *डॉ. अनीता गुप्ता*	49
8.	छठी दलाई लामा की कविताओं में अध्यात्म का स्वरूप *डॉ. जोराम यालाम नाबाम*	62
9.	संत भक्त कवि तुलसी *प्रो. उमा मिश्र*	68
10.	राष्ट्रीय चेतना का स्वर एवं संघ-गीत *विपिन बिहारी पाठक, डॉ. पूजा धमिजा*	74
11.	नवीन उजास की ओर बढ़ता कदम : कामायनी और वर्तमान संदर्भ *डॉ. रेनू त्रिपाठी*	79
12.	भक्तिकाव्य का नवोन्मेष (डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल' की काव्यकला के संदर्भ में) *डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्र*	85
13.	दिखा गई पथ : कहानीकार सुभद्राजी *डॉ. अचला पाण्डेय*	92
14.	प्रसाद : अंतर्विरोधों के समन्वयक *डॉ. विनिता चौहान*	100

पीयर रिव्यूड/यू.जी.सी. केयर लिस्टेड **हिंदी अनुशीलन ISSN : 2249-930X / 3**





15. केदारनाथ अग्रवाल का सौन्दर्य प्रेम 106
अल्पना कुशवाहा
16. भाषा में मुहावरे एवं लोकोक्तियों का महत्व 111
डॉ. वंदना मिश्रा
17. लोक संस्कृति के दृष्टि : अवधी लोकगाथाएँ 116
डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव
18. महाकवि प्रसाद एवं निराला के प्रयाण गीतों की सांस्कृतिक चेतना 121
सौरभ उपाध्याय
19. महात्मा गाँधी का शिक्षा-चिंतन 128
डॉ. प्रीति भट्ट
20. अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति की धार्मिक लोकगाथाओं का समाज-सांस्कृतिक महत्व 132
ईंग परमे, ओकेन लेगो
21. मंगलेश डबराल के काव्य में सांस्कृतिक चिन्तन 143
सुरेश कुमार मिश्र
22. हिंदी साहित्य के विकास में 'नई कविता' पत्रिका का योगदान 148
डॉ. हरेकृष्ण तिवारी
23. समय, समाज और स्त्री 153
डॉ. किरण शर्मा
24. आंचलिक उपन्यासों की परम्परा में अलग-अलग वैतरणी का वैशिष्ट्य 157
डॉ. अजीत सिंह
25. सांस्कृतिक पुनर्जागरण की कथा 'महासमर' 161
डॉ. राजेश कुमार गर्ग
26. हिन्दी सूफी काव्य पर नाथपंथ का प्रभाव 166
डॉ. विनम्र सेन सिंह
27. पोषित कल्पना प्रवास में 172
डॉ. कीर्ति माहेश्वरी
28. अनुसंधान कदाचार के मानविकी विषयों के साहित्य की समीक्षा 177
प्रो. हरदीप सिंह
29. स्वास्थ्य पत्रकारिता 188
जितेन्द्र सिंह राजपुरोहित

पीयर रिव्यूड/यू.जी.सी. केयर लिस्टेड **हिंदी अनुशीलन ISSN : 2249-930X / 4**

प्रसाद : अंतर्विरोधों के समन्वयक

डॉ. विनिता चौहान

छायावादी काव्यधारा के प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद का जीवन और व्यक्तित्व विरोधों के समन्वय का बेहतरीन उदाहरण हैं। प्रसाद के व्यक्तित्व में शालीनता- विनोद का, वैचारिक गांभीर्य-मिलनसारिता का, व्यावहारिकता- भावात्मकता का अनूठा समावेश था। उनकी दुकान पर प्रत्येक शाम को होने वाली सहज एवं अनौपचारिक चर्चा में हर आयु- वर्ग के लेखक, कलाकार शामिल होते थे। इस बैठक में आपसी विरोधों के बावजूद जिस सामंजस्य का दर्शन होता, वह प्रसाद के व्यक्तित्व की आभा का ही स्पष्ट प्रभाव था।

कवि प्रसाद से मिलने वालों की संख्या भले ही काफी रही हो परंतु सच्चे मित्र को जिंदगी की सबसे दुर्लभ नियामत मानने वाले प्रसाद का अंतर्मन एकाकी ही रहा, इसकी अभिव्यक्ति उन्होंने इस प्रकार से की है-

"और चाहता इतना सूना
कोई भी न पास होता।"[1]

प्रसाद ने मित्रता संबंधी चर्चा में एक बार कहा भी कि मित्र की मेरी जो परिभाषा है उसमें अंट सकें ऐसा मेरा कोई मित्र नहीं है।जब उनसे मित्रता की परिभाषा पूछी गयी तो उन्होंने कहा ,"मित्रता का मेरा आदर्श कृष्णार्जुन-सख्य हैं।"[2]

जयशंकर प्रसाद के जीवन में समन्वय का दर्शन पग-पग पर होता रहा है। वे हिंदू देवता इंद्र, शिव और कृष्ण के प्रति विशेष आकर्षित रहें। ये तीनों चरित्र विरोधी पक्षों के सामंजस्यकार हैं-इंद्र : एक योद्धा एवं संगीत प्रेमी देवता हैं, शिव : योगी एवं भोगी, ज्ञानी एवं भोलेनाथ, क्रोधी एवं आशुतोष देव हैं तथा कृष्ण : प्रेमी एवं वैरागी,कूटनीतिज्ञ एवं संवेदनशील जैसे गुणों को समाहित किए हुए हैं।

शिव भक्ति प्रसाद को बाल्यकाल से ही पारिवारिक संस्कारों के रूप में मिली, अतएव शिव के प्रति उनकी आस्था होना स्वाभाविक है। इंद्र प्राचीन आनंदवादी विचारधारा के प्रतिनिधि, आत्मवाद के प्रचारक, उल्लास के प्रतीक रूप में प्रसाद के निकट रहें।अपने निबंधों 'प्राचीन आर्यावर्त और उसका प्रथम सम्राट इंद्र, और 'रहस्यवाद' 'में प्रसाद विवेकवादी विचारधारा के प्रतिनिधि वरुण और आनंदवादी विचारधारा के प्रतिनिधि इंद्र में से इंद्र के ही पक्षधर रहें। इसी तरह पौराणिक काल में विवेकवादी विचारधारा के प्रतीक राम से अधिक उनका रुझान आनंदवादी विचारधारा के प्रतीक कृष्ण के लिए रहा।

समन्वयशीलता प्रसाद की काव्ययात्रा के विविध-आयामों में भी दृष्टिगोचर होती है। जितना हम प्रसाद को पढ़ते और समझते हैं उतना ही उनके काव्य में परत-दर-परत अद्भुत वैचारिक गुम्फन का प्रकाशन होता जाता है। जिस समय प्रसाद ने कविता लिखना आरंभ किया उस समय उन्होंने काव्यभाषा के रूप में ब्रज को अपनाया परंतु बाद में वे खड़ी बोली में कविता करने लगे। ब्रज से खड़ी बोली की यात्रा का महत्त्वपूर्ण प्रभाव 'बभ्रुवाहन' है, जहां खड़ी बोली को ब्रज का चोला पहनाकर कवि ने लिखा है कि-

"धवल मनोहर दृष्टि सुखदायक हिय अनुराग